उपनिषद्-सुधा बिन्दु

यथा पुरस्ताद् भविता प्रतीत औद्दालकिरारुणिर्मत्प्रसृष्टः।
सुखँ रात्रीः शयिता वीतमन्युस्त्वां ददृशिवान् मृत्युमुखात् प्रमुक्तम्।।

(कठोपनिषद् : १/१/११)

(यम ने कहाह्नह्न)''मेरी कृपा से तुमको मृत्यु के मुख से छूट कर घर लौटा हुआ देख कर तुम्हारे पिता अरुण-पुत्र उद्दालक पूर्व की भाँति तुम्हें पहचान लेंगे, क्रोध से रहित हो जायेंगे तथा सुख की नींद सोयेंगे।''

ॐ

साधक के लिए राम-नाम एक महान् शक्ति है। राम-नाम दिव्य ऊर्जा से परिपूर्ण है। राम-नाम का स्मरण करते रहने से असीम भगवत्कृपा प्राप्त होती है। राम-नाम से आपको बाधाओं पर विजय प्राप्त करने हेतु अपरिमित आन्तरिक शक्ति प्राप्त होती है।

ह्नह्नस्वामी शिवानन्द

शिवानन्दस्तुतिः

मणिपुर महाराजा श्री बोधचन्द्र सिंह

आलोक्य सर्वान् कलिदोषयुक्तान्
कथं तरेयूरिति वा विभाव्य ।
सृष्टो विधात्रा तरणाय त्वं हि
दीने कृपालुर्विबुधस्वभावः ।।१।।

इस युग के समस्त लोगों को कलि के दोषों से युक्त देखते हुए तथा इस पर चिन्तन करते हुए कि इस दोष से वे कैसे मुक्त हों, लगता है कि सृष्टिकर्ता ने आपह्नजो कि स्वभाव से देवतुल्य हैं तथा दीनों के प्रति इतने कृपालु हैंह्नको बनाया है।

हरेर्नियोगः परिपालनीय
इति तु बुद्ध्वा जगतां शुभं च ।
सम्पादनीयं भवतां प्रयत्नात्
का नाम चिन्ता भवति स्थिते हि ।।२।।

संसार के हित को ध्यान में रख कर कृपया सृष्टिकर्ता की इस इच्छा को प्रयत्नपूर्वक पूर्ण करते रहें। जब आप हैं तो फिर यहाँ दुःख को स्थान कहाँ है?

दिगन्तव्याप्तं यश एव योगिन्
लब्ध्वा मनुष्याः श्रवणेन्द्रियेण ।
लषन्ति सर्वे तव दर्शनं च
यथेव भृङ्गाः कुसुमस्य रूपम् ।।३।।

हे योगी, चतुर्दिक् स्वयमेव फैली हुई आपकी महिमाओं का श्रवण करके लोग आपके दर्शनों के लिए इस प्रकार व्याकुल हैं जैसे मधुमक्षिकाएँ पुष्पों को देखने के लिए लालायित रहती हैं।

यथा द्विरेफा मकरन्दलोभा–
दुड्डीय कामं कुसुमेषु लग्नाः ।
तथा मनुष्यास्तव योगलोभात्
सम्प्राप्य भूयस्त्वयि दत्तचिन्ताः ।।४।।

जिस प्रकार मधुमक्षिकाएँ इधर–उधर उड़ती हुई जब फूलों को देखती हैं तो मकरन्द के लोभवश वहीं चिपक जाती हैं, उसी प्रकार योग के लिए लालायित लोग आप तक पहुँचने का प्रयत्न करते रहते हैं तथा सदा आपका ही चिन्तन करते रहते हैं।

धन्वन्तरिस्त्वं भवरोगनाशे
दिवाकरस्त्वं विषयान्ध्यदूरे ।
तारापतिस्त्वं भवतापशान्तौ
प्लवस्वरूपः पतितोद्धृतौ च ।।५।।

आप भवरोग का निवारण करने के लिए धन्वन्तरि हैं; विषय–वासनाओं का अन्धकार दूर करने के लिए सूर्य हैं, भवतापों को शान्त अथवा शीतल करने के लिए आप चन्द्रमा हैं तथा पतितों को भवसागर से पार उतारने के लिए आप नौका हैं।

लभस्व योगिन्! शतवर्षमायु–
र्ददस्व तावद् भवतापशान्तिम् ।
आवेदय त्वं सदसद्विचारं
कुरु प्रचारं खलु कृष्णनाम्नः ।।६।।

हे योगि! आप शतवर्ष आयु सम्पन्न हों! अपने शत वर्ष के जीवन–काल में आप भवताप से व्याकुल लोगों को यों ही शान्ति प्रदान करते रहें! आप सद्–असद् का विवेक देते रहें। भगवन्नाम की महिमा का आप यों ही प्रचार करते रहें।

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

ब्रह्मचर्य-साधना के कुछ प्रभावशाली साधन ३

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

विवेक तथा वैराग्य का सम्पोषण करें

व्यक्ति को सत् आत्मा तथा असत् अशुद्ध शरीर में विवेक करने का प्रयास करना चाहिए। साधक को कामुक जीवन के दोषों अर्थात् शक्ति की क्षति, इन्द्रियों की दुर्बलता, रोग, जन्म तथा मृत्यु, राग तथा विविध प्रकार के दुःखों को अपने मन को निर्दिष्ट करना चाहिए। उसे अपने को स्त्री-शरीर के तत्त्वोंह्वह्वअस्थि, मांस, रुधिर, मल, मूत्र, पीप तथा कफह्वह्वके विषय में बारम्बार स्मरण दिलाते रहना चाहिए। इन विचारों को मन में बार-बार ठूँसना चाहिए। साधक को सदैव नित्य शुद्ध अमर आत्मा तथा आध्यात्मिक जीवन की महिमा अर्थात् अमरत्व, शाश्वत आनन्द तथा परम शान्ति की प्राप्ति के विषय में सोचना चाहिए। मन की स्त्री की ओर, चाहे वह कितनी ही सौन्दर्यवती क्यों न हो, देखने की आदत धीरे-धीरे छूट जायेगी। उसको कुविचार से देखने में मन काँप उठेगा। स्त्रियों को भी सतीत्व में प्रतिष्ठित होने के लिए उपर्युक्त साधनाएँ करनी चाहिए।

विवेकी व्यक्ति पुरुष और स्त्री में कोई भेद नहीं देखता है। वही तत्त्वह्वह्वकाम, क्रोध, लोभ तथा मोहह्वह्वजो पुरुष में विद्यमान् हैं, स्त्री में भी पाये जाते हैं। प्रबल काम-वासना से पीड़ित कामुक व्यक्ति ही कल्पित भेद पाता है। यह सब भेद कल्पित हैं।

यदि आप वैराग्य विकसित करें, यदि आप अपनी इन्द्रियों का दमन करें तथा यदि आप विष्ठा तथा विष के समान असत्, नश्वर वैषयिक सुख तथा इस अनित्य संसार के भोगों से दूर रहें, तो आपको इस संसार में कुछ भी प्रलुब्ध नहीं कर सकेगा। आपको स्त्री तथा अन्य पार्थिव पदार्थ आकृष्ट नहीं करेंगे। काम आपको अपने अधिकार में नहीं कर सकेगा। आपको शाश्वत शान्ति तथा आनन्द प्राप्त होगा।

निरन्तर स्मरण रखिएह्वह्व''मैं भगवद्-कृपा से दिन-प्रति-दिन शुद्धतर होता जा रहा हूँ। सुख आते हैं, किन्तु टिके रहने के लिए नहीं। यह मर्त्य शरीर मृत्तिका मात्र है। प्रत्येक वस्तु नाशवान् है। ब्रह्मचर्य ही एकमात्र उपाय है।'' विवेक तथा वैराग्य विकसित कीजिए।

साधकों को भर्तृहरि का 'वैराग्य-शतक' तथा वैराग्य का प्रतिपादन करने वाले अन्य ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए। इससे मन में वैराग्य उत्पन्न होगा। मृत्यु तथा संसार के दुःखों का स्मरण भी आपकी पर्याप्त मात्रा में सहायता करेगा। यहाँ पाठकों का ध्यान उन कुछ बौद्ध-भिक्षुओं की ओर आकर्षित करना असंगत न होगा, जो अपने साथ सदा एक नर-कंकाल रखते हैं। यह उनमें वैराग्य उत्पन्न करने तथा उन्हें मानव-जीवन के अस्थायी तथा विनाशशील स्वरूप का स्मरण दिलाने के लिए है।

एक दार्शनिक ने एक बार अपने हाथ में एक महिला का कपाल पकड़ रखा था। उसने दार्शनिक रूप से इस प्रकार प्रस्तुत करना प्रारम्भ कियाह्वह्व''हे कपाल! कुछ समय पूर्व तुमने अपनी चमकदार त्वचा तथा गुलाबी कपोलों से मुझे लुभाया था। अब तुम्हारी वह मनोहरता कहाँ है ? वे मधुमय ओष्ठ तथा कमल-नेत्र अब कहाँ हैं?'' उसने इस भाँति तीव्र वैराग्य विकसित किया। यदि आप मानव-शरीर के विभिन्न अंगों का विश्लेषण करें तथा अपने मन के नेत्रों के समक्ष अस्थि तथा मांस का चित्र रखें, तो आपको अपने शरीर अथवा किसी महिला के शरीर के प्रति रंचमात्र भी आसक्ति नहीं होगी। इस विधि का प्रयोग क्यों नहीं करते ?

नर-कंकाल अथवा स्त्री के शव की स्मृति आपके मन में वैराग्य उत्पन्न करेगी। यह शरीर घिनावने प्रस्राव से प्रकट हुआ है तथा अशुद्धताओं से पूर्ण है। अन्त में यह भस्मीभूत

हो जायेगा। यदि आप इसे स्मरण रखें, तो आपके मन में वैराग्योदय होगा जिससे स्त्रियों के प्रति आकर्षण धीरे-धीरे लुप्त हो जायेगा। यदि आप अपने मन के सम्मुख किसी रुग्ण स्त्री की आकृति अथवा अत्यन्त वृद्ध स्त्री का चित्र रखें, तो आपके मन में वैराग्य विकसित होगा। संसार के दुःखों, विषय-पदार्थों के मिथ्यात्व तथा पत्नी और बच्चों के प्रति आसक्ति से उत्पन्न बन्धन को स्मरण कीजिए। कोई भी विधि जो आपके लिए सर्वाधिक उपयुक्त हो, प्रयोग कीजिए।

बैठ जाइए तथा शान्तिपूर्वक ईमानदारी से सोचिए कि भला इस स्त्री में क्या सौन्दर्य है जिसका शरीर अस्थि, मांस, स्नायु, वसा, मज्जा तथा रक्त से निर्मित है! जब वह स्त्री वृद्ध हो जाती है, तब उसमें वह सौन्दर्य कहाँ रहता है? सात दिनों तक ज्वरग्रस्त रहने के पश्चात् एक स्त्री के नेत्रों तथा शरीर की दशा को देखिए। उसके सौन्दर्य की क्या अवस्था है? यदि वह एक सप्ताह तक स्नान न करे, तो सौन्दर्य कहाँ रहा ? उसमें घृणाजनक दुर्गन्ध होती है। उस पचासी वर्षीया जराग्रस्त स्त्री की ओर देखिए जो धँसे हुए नेत्रों तथा झुर्रीदार कपोलों और चमड़े के साथ कोने में बैठी हुई है। स्त्री के अंगों का विश्लेषण कीजिए तथा उनके वास्तविक स्वरूप को पूर्ण रूप से समझिए।

स्त्री का मोह सबसे बड़ा कारण है। स्त्रियाँ अवगुणों की ज्वालाएँ हैं। वे जलती हुई अग्नि हैं जो पुरुष को शुष्क घास-फूस की भाँति नष्ट कर डालती हैं। वे बहुत दूर से ही जलाती हैं, अतः वे अग्नि की अपेक्षा अधिक खतरनाक हैं। सुन्दर युवती विषैली मदिरा के समान है, जो कामुक उन्माद उत्पन्न कर तथा विवेक को आच्छादित कर जीवन को नष्ट कर डालती है। इस संसार का उद्भव स्त्री से ही हुआ है और इसका सम्पोषण भी स्त्री ही करती है। भला स्त्री का त्याग किये बिना शाश्वत ब्रह्मानन्द की प्राप्ति कैसे सम्भव है? उन सुन्दरी युवतियों के शरीर को जिन्हें मूर्ख जन इतना अधिक लाड़-प्यार करते हैं, उनके प्राणोत्सर्ग के पश्चात् कब्रिस्तान में ले जाते हैं जहाँ उन्हें पशु तथा कृमि खाते हैं तथा शृगाल तथा चील उनके चमड़े को फाड़ डालते हैं। स्त्री का त्याग किये बिना आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना असम्भव है।

स्पष्टीकरण-टिप्पणी

इन पंक्तियों को पढ़ कर महिलाओं को रुष्ट नहीं होना चाहिए। मैंने तो शंकराचार्य तथा दत्तात्रेय का उपदेश ही पुनः प्रस्तुत किया है। मैं केवल स्त्री तथा पुरुषद्वद्वदोनों ही जातियों के मन में ब्रह्मचर्य की प्रभावशीलता तथा महिमा और काम के दुष्प्रभावों को बैठाना चाहता हूँ। मुझमें स्त्रियों के प्रति बड़ा सम्मान तथा बड़ी श्रद्धा है।

पुरुष तथा स्त्रीद्वद्वदोनों को ही ब्रह्मचर्य का अभ्यास करना चाहिए। स्त्रियों को भी अपने मन में पुरुष के भौतिक शरीर के प्रति जुगुप्सा उत्पन्न करने तथा वैराग्य विकसित करने के लिए पुरुष के शरीर के संघटक अवयवों का एक मानसिक चित्र अपने समक्ष रखना चाहिए।

मन को कामेषणा से अलग कर देने के लिए काम की निन्दा मात्र ही पर्याप्त नहीं है। इस विषय को भली-भाँति स्मरण रखें। काम शक्तिशाली है। काम अनिष्टकर है। काम भयानक है। दुर्बल इच्छा-शक्ति वाले व्यक्ति के लिए काम अनियन्त्रणीय है। व्यक्ति को माया के तरीकों से अवगत होना चाहिए, जो उसे अपने जाल में अथवा पाश में फँसा लेती है। स्त्री को पुरुष की मनमोहकता से अवगत होना चाहिए, जो उसे लुभाती और पुरुष का शिकार बनाती है। इसी भाँति पुरुष को स्त्री की मनमोहकता से अवगत होना चाहिए, जो उसे लुभाती और अपना शिकार बनाती है। स्त्री पुरुष के लिए प्रलोभिका है तथा पुरुष स्त्री के लिए प्रलोभक है। पुरुष में स्त्री को फँसाने के लिए पर्याप्त मनमोहकता है। पुरुष के नेत्रों में स्त्री उतनी सुन्दर नहीं लगती जितना कि स्त्री के नेत्रों में पुरुष सुन्दर लगता है। पुरुष भी स्त्री को अपने पहनावे, अपनी मुस्कान, प्रेम के बाह्य प्रदर्शन, चितवन, हाव-भाव अलंकारिक वाणी, बालों को नाना प्रकार से सँवारने तथा अन्य छल-बल से फँसाने का प्रयास करता है।

(अनूदित)

केवल ब्रह्म का ही अस्तित्व है इस पर दृढ़ रहें!

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

जगद्गुरु आदिशंकराचार्य ने साधना के लिए जो नवीन दृष्टिकोण दिया, हम उसकी चर्चा कर रहे थे। एक और भी साधक थे, एक जिज्ञासु साधक जिन्हें भगवान् की कृपा से एक विशेष अन्तर्ज्ञान, एक विशेष अन्तर्दृष्टि प्राप्त हो गयी थी और वह वस्तु-पदार्थों को भी एक भिन्न ढंग से देखने लगे थे। जब आप अलग ढंग से देखते हैं, तब आप उन्हें अलग ही रूप में देखने लगते हैं। अपने अनुभवों को बतलाते समय वह कहा करतेह्वह्व''हम वस्तु-पदार्थों को एक ही ढंग से देखते रह कर व्यर्थ ही भ्रम में पड़े हुए हैं। क्योंकि हजारों-लाखों सदियों से उन्हें इस प्रकार देखा जाता है, इसलिए आप सोचते हैं कि बस एक यही सही ढंग है, जब कि इसमें ऐसा कुछ नहीं है। अतः ठहरें। इधर वापस पलट जायें और अब नयी दृष्टि से देखें!''

इस प्रकार हम इस 'तुच्छ मैं' की अहं-चेतना से संघर्ष करते रहते हैं और यह छोटी मैं कभी भी मरती नहीं, बल्कि बार-बार आ खड़ी होती है। जब हम समझते हैं कि हमने इसे समाप्त कर दिया है, तब यह फिर उठ खड़ी होती है। एक कभी न समाप्त होने वाला बारम्बार दुरूह पुनर्जीवन और फिर से व्यक्ति को कष्ट में धकेले जाना! हम इससे संघर्ष करते जाते हैं, इसे मिटाने का प्रयत्न करते रहते हैं, इस तुच्छ 'मैं' को मारने के लिए हर कोशिश करते जाते हैं, जीने के लिए मरते हैं जिससे कि हम दिव्य जीवन जी सकें।

यहीं पर जगद्गुरु आदि शंकराचार्य आते हैं और एक ही डंके की चोट पर कहते हैंह्वह्व''किसके विरोध में तुम संघर्षरत हो? यह अस्तित्वविहीन भ्रम है। इसकी कोई सत्ता नहीं है। जो वस्तु है ही नहीं, उसको न मानने में, उसे अस्वीकार करने में संघर्ष करके समय और शक्ति बरबाद करने की क्या आवश्यकता है? कितनी बड़ी अज्ञानता है यह! अस्तित्वहीन को नकारने और वास्तविक सत्ता को दृढ़ करने की साधना के स्थान पर, एक बार यदि आपने जान लिया कि अवास्तविक की कोई सत्ता नहीं हैह्वह्वयह अस्तित्वहीन भ्रम मात्र हैह्वह्वतो आप एकदम से कह उठेंगे : ''मैं यह क्या कर रहा हूँ? मुझे तो बस वास्तविक सत्ता को दृढ़ता से पकड़े रखना है। मुझे अस्तित्वहीन छलावे के पीछे भागने की आवश्यकता नहीं है।'' अतः वास्तविक साधना हैह्वह्ववास्तविक सत्ता को दृढ़ करने की।

यह कहने की अपेक्षा कि सागर की असंख्य लहरें सागर से अलग नहीं हैंह्वह्वकि वह वास्तव में सागर ही हैं भले ही वह अनगिनत, भिन्न-भिन्न लहरें दिखायी देती हैंह्वह्वबस केवल सागर की सत्ता को दृढ़ता से स्वीकारते जायें। केवल सागर के प्रति जागरूक रहें। अन्य सब ढंग छोड़ दें, केवल सागर के प्रति अपनी दृढ़ता बनाये रखें। सागर ही हो जायें। बस समझें, सब हो गया। इसमें अपने समय और शक्ति को क्यों नष्ट करना कि पहले नकारने के संघर्ष, फिर स्वीकारने की प्रक्रिया में लगे रहें।

'एकमेवाद्वितीयम्।' केवल एक की ही सत्ता है। अन्य बहुत से कोई हैं ही नहीं। इसलिए अन्य अनेक कहे जाने वाले भी केवल मात्र 'एक वह' ही हैं, भले ही हमें वे बहुत से प्रतीत होते हैं। भले ही सब असंख्य भिन्न-भिन्न नाम-रूप और आकार के लग रहे हों; परन्तु वास्तव में सब एकमात्र 'वह' ही हैं। कपड़े की दुकान में केवल सूत की ही सत्ता है। चाहे वह धोती के रूप में हो, तौलिया नाम से हो, सिरहाने का लिहाफ, कुर्ता या मेजपोश कहलाता हो, वह कुछ भी कहा जाता या दिखायी देता हो, किन्तु हर नाम-रूप और आकार में केवल सूत की ही सत्ता है।

आपने स्वर्ण का कंगन पहन रखा हो, चेन या अँगूठी

पहनी हो; किन्तु आपने यह अलग-अलग नाम आभूषणों के रूप में केवल स्वर्ण ही पहना हुआ है। यह सब बहुत-सी भिन्न-भिन्न वस्तुएँ न हो कर केवल एकमात्र स्वर्ण ही है। कुम्हार की दुकान में बेचने के लिए असंख्य बरतन सजाये गये होते हैंह्वह्वअनेक भाँति के आकार और माप के सब होते हैं। किन्तु आप उन सब भिन्न-भिन्न नामों से प्रतीत होने वाले बरतनों को नहीं, केवल एक ही वस्तु को वास्तव में देख रहे होते हैं। उन सबके पीछे निहित सत्ता केवल मिट्टी की ही है।

इसलिए केवल उसी के प्रति जागरूकता क्यों न रखी जाये! कपड़े की दुकान में केवल सूत (कपास) है, सुनार की दुकान में केवल स्वर्ण है और कुम्हार के पास केवल मिट्टी ही दिखायी देती है। और आप वास्तव में केवल ब्रह्म को ही देखते हैं, क्योंकि 'एक वही' अनेक बना हुआ है। उपनिषदों ने और ब्रह्मसाक्षात्कार-प्राप्त सन्त-महात्माओं ने अपनी लोकोत्तर अनुभूति के आधार पर यही उद्घोषित किया है।

जब ऐसा है तो फिर जैसे शंकराचार्य ने ब्रह्म की व्याख्या करने के लिए जो अभूतपूर्व ढंग अपनाया, क्यों न आप अपनी साधना द्वारा 'उन' तक पहुँचने के लिए नया ढंग अपना लें। यह कहने की अपेक्षा कि 'असत् नहीं है, नश्वरता की सत्ता नहीं है, अन्धकार का अस्तित्व नहीं है' इनको एक ओर छोड़ कर 'केवल परमात्मा की ही सत्ता है, केवल प्रकाश ही है, केवल अमरता का ही अस्तित्व है' इसी को दृढ़ करते जायें। अकारण ही यह क्यों कहना कि अभी मैं अन्धकार में हूँ, मुझे प्रकाश में ले चलें; कि मैं नश्वरताओं से घिरा हुआ हूँ, मुझे अनश्वरता की ओर ले चलें; कि मैं अवास्तविकताओं से घिरा हुआ हूँ, मुझे वास्तविक सत्ता की ओर ले चलें। क्यों अनावश्यक ही इस प्रकार कहें? क्यों पहले उल्टे रास्ते जा कर अँधेरे और नश्वरता की सत्ता को स्वीकार करें और फिर प्रार्थना करें कि 'हमें इन अस्तित्वविहीन भ्रान्तियों से बाहर निकालें जो वास्तविक सत्ता में हैं ही नहीं, क्योंकि केवल सर्वत्र सर्वदा एकमात्र परमात्मा का ही अस्तित्व है', इसकी अपेक्षा केवल इतना ही कहेंह्वह्व''परमात्मा का ही अस्तित्व है। समस्त अन्धकारों से परे प्रकाशों के भी प्रकाश का ही अस्तित्व है। सदा-सर्वदा, शाश्वत अमरत्व का, परब्रह्म परमात्मा का ही अस्तित्व है।''

उसी परात्पर परब्रह्म की, उसी महान् प्रकाश, शाश्वत प्रकाश की जागरूकता में रहें। अपनी चेतना को प्रकाश, शाश्वत अमर जीवन के उदात्त आयाम तक उन्नत करके रखें। उसी चेतना में निवास करेंह्वह्ववास्तविक चैतन्य, प्रकाशित चैतन्य, शाश्वत चैतन्य में स्थित रहें! भगवान् और गुरुदेव इसमें हमारी सहायता करें और सफलता तथा आशीर्वाद प्रदान करें!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

एक बोध कहानी : पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की जबानी

एक लखपति थाह्वह्वअत्यन्त अधार्मिक तथा दम्भी। एक बार भगवान् कृष्ण तथा अर्जुन उसके पास छद्मवेश में गये। उसने उनको अपमानित करके भगा दिया। भगवान् कृष्ण ने शान्त भाव से कहाह्वह्व''भगवान् करे, तुम करोड़पति हो जाओ!''

फिर भगवान् कृष्ण और अर्जुन एक निर्धन व्यक्ति के घर गये। उसके घर में गाय के अतिरिक्त और कुछ न था। उसने उन दोनों का आदर-सत्कार किया। चलते समय भगवान् के श्राप दियाह्वह्व''तुम्हारी यह एकमात्र सम्पत्ति गाय शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो!''

बाद में अर्जुन ने भगवान् कृष्ण से कहाह्वह्व''भगवन्, आपका व्यवहार बड़ा विचित्र था!''

भगवान् कृष्ण ने कहाह्वह्व''मेरा व्यवहार बिलकुल उचित था। जब वह लखपति करोड़पति बनेगा, तब उसे अनेक कष्टों का सामना करना पड़ेगा। तब उसे मुझ भगवान् का विस्मरण हो जायेगा। वह निर्धन भक्त अपनी गाय में इतना अधिक आसक्त है कि उसकी आसक्ति ही उसकी भक्ति में बाधक बन रही है। उस गाय से मुक्ति पा कर वह निर्बाध भक्ति कर सकेगा।'' भगवान् अपने पास बुलाने के लिए कभी-कभी भक्त की प्रियतम वस्तु छीन लेता है। भगवान् जो-कुछ करता है, भले के लिए ही करता है।

स्मृतिग्रन्थ अथवा धर्म-संहिता :

कर्मकाण्ड का अर्थ ४

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

संस्कार

धर्म के कर्मकाण्ड भाग के अन्तर्गत धार्मिक उत्सवों-समारोहों के एक समूह को संस्कार (शुद्धिकर अनुष्ठान), क्रिया (पवित्र कार्य) और व्रत (नियम) कहते हैं। संस्कारों का सम्बन्ध जीवन की विभिन्न अवस्थाओं से, क्रियाओं का वर्ष की ऋतुओं से तथा व्रतों का सम्बन्ध विशेष अवसरों से होता है। जीवन की अवस्थाएँ हैंह्लब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। प्रारम्भिक जीवन से सम्बन्धित मुख्य संस्कार तथा इन्हें सम्पन्न करने के अवसर इस प्रकार हैं :

(१) जातकर्मह्लजब शिशु का जन्म होता है।

(२) नामकरणह्लजब शिशु का प्रथम बार नाम रखा जाता है।

(३) अन्नप्राशनह्लजब बच्चे को पहली बार ठोस भोजन दिया जाता है।

(४) विद्यारम्भह्लजब बच्चे को अक्षर-ज्ञान, शिक्षा की पहली सीढ़ी, कराया जाता है।

(५) उपनयनह्लबच्चे के बड़े हो जाने पर जब उसे यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है तथा गायत्री-मन्त्र की दीक्षा दी जाती है। उपनयन-संस्कार से ही आध्यात्मिक जीवन की प्रथम अवस्था का प्रारम्भ होता है। इस अवस्था से ब्रह्मचर्य का जीवन प्रारम्भ होता है। बालक समाज के किस वर्ग का सदस्य है, इस दृष्टिकोण से उसे जिस प्रकार की धार्मिक शिक्षा तथा ज्ञान की आवश्यकता होती है, उसे प्रदान करने की दृष्टि से उसे (बालक को) गुरु के संरक्षण में रख दिया जाता है।

(६) समावर्तनह्लजब बालक शिक्षा समाप्त करके घर लौटता है, तब यह संस्कार सम्पन्न किया जाता है। वर्तमान समय में इस संस्कार का महत्त्व समाप्त हो गया है; क्योंकि अब गुरु के पास रह कर शिक्षा नहीं प्राप्त की जाती। अतः औपचारिकता निभाने के लिए यह संस्कार विवाह के समय सम्पन्न कर दिया जाता है।

(७) विवाहह्लसामान्यतया विद्याध्ययन की (ब्रह्मचर्य की) अवस्था समाप्त होने पर विवाह-संस्कार होता है तथा नवयुवक ब्रह्मचारी गृहस्थी बन कर घर पर ही रहने लगता है।

यद्यपि विद्याध्ययन के बाद गृहस्थाश्रम में जीवन-यापन करना अधिकतर एक सामान्य बात मानी जाती है; परन्तु कुछ अपवादिक विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं, जिनमें आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने की ललक बहुत प्रबल होती है। उन्हें सांसारिक जीवन (प्रवृत्ति) में रुचि नहीं होती। ये निवृत्ति-मार्ग के राही बन कर आध्यात्मिक लक्ष्य को ही अपना जीवन पूर्ण रूप से समर्पित कर देते हैं। ऐसे विद्यार्थी ब्रह्मचर्य की अवस्था की समाप्ति के बाद नैष्ठिक ब्रह्मचारी के रूप में गुरु की आजीवन सेवा करते हुए या संन्यासी के रूप में पूर्णकालिक आध्यात्मिक जिज्ञासु की अवस्था में प्रवेश कर सकते हैं।

वृद्ध होने पर गृहस्थ से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सक्रिय जीवन से निवृत्त हो कर तथा सम्बन्धी-मित्रों के सम्पर्क-बन्धन से अपने को मुक्त करके वानप्रस्थ का अति-संयमी जीवन व्यतीत करे। यह अवस्था जीवन की अन्तिम अवस्थाह्लह्लसंन्यासह्लमें प्रवेश करने की तैयारी है। संन्यास की अवस्था में साधक सांसारिक जीवन के समस्त बन्धनों से मुक्त हो कर पूर्ण रूप से ईश्वर के चिन्तन में अथवा इस सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक कार्यों में रत हो जाता है।

जीवन का लक्ष्य है ईश्वर-साक्षात्कार। इस परम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जीवन की ये विभिन्न अवस्थाएँ

उपक्रमात्मक प्रक्रियाएँ हैं। सम्पूर्ण जीवन ईश्वर का साक्षात्कार करने हेतु आवश्यक शिक्षा प्राप्त करने की सतत प्रक्रिया है। जीवन एक यात्रा है, जिसका अन्तिम पड़ाव है पूर्णता की प्राप्ति।

ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थ की अवस्थाओं में विभिन्न प्रकार के धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न करने का विधान है। गृहस्थ तथा ब्रह्मचारीह्वह्वदोनों के लिए तीन बार सन्ध्या-वन्दन करना अनिवार्य है। सन्ध्या-वन्दन मुख्यतया सूर्य की प्रार्थना है, जिसमें ईश्वर के देदीप्यमान मुख का मानस-दर्शन करके उसकी पूजा की जाती है।

अपने इष्टदेव की दैनिक उपासना करना भी गृहस्थ के लिए अनिवार्य है। चाहे वह घर पर हो या घर से बाहर, यह उपासना हर परिस्थिति में करनी ही होती है। यह दैनिक उपासना बड़े-बड़े मन्दिरों में की जाने वाली उपासना की तरह विस्तृत न हो कर उसका संक्षिप्त रूप है, यद्यपि इसमें (दैनिक उपासना में) उपासना की प्रक्रिया के समस्त आवश्यक तत्त्व निहित होते हैं।

गृहस्थ के दैनिक कार्यों का महत्त्वपूर्ण भाग हैं पंचमहायज्ञ। इनमें से प्रथम है ब्रह्म-यज्ञ अर्थात् धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने तथा सुपात्र विद्यार्थियों को उनका ज्ञान प्रदान करने के रूपों में वेदों तथा उनके द्रष्टा ऋषियों को समर्पित यज्ञ। द्वितीय है देव-यज्ञ अर्थात् पवित्र अग्नि में आहुतियाँ डाल कर देवों को निवेदित यज्ञ। तृतीय है पितृ-यज्ञ अर्थात् पूर्वजों को प्रदत्त आहुतियाँ। चतुर्थ है मनुष्य-यज्ञ अर्थात् अतिथि-सेवा। पंचम यज्ञ है भूत-यज्ञ अर्थात् पशुओं, विशेष रूप से गायों तथा पक्षियों को भोजन देना। ये पाँच कृत्य गृहस्थों के लिए अत्यावश्यक हैं। इन्हें पंचमहायज्ञ की संज्ञा देना उचित ही है।

इनके अतिरिक्त कुछ धार्मिक कृत्य ऐसे होते हैं जिन्हें प्रति माह सम्पन्न किया जाता है, जैसे प्रत्येक अमावास्या के दिन पूर्वजों को आहुतियाँ देना तथा प्रत्येक शुक्ल पक्ष की एकादशी को उपवास रखना। प्रति वर्ष किये जाने वाले धार्मिक कृत्य ये हैंह्वह्वराम-नवमी, कृष्ण-जयन्ती, गणेश-चतुर्थी, नवरात्र-पूजा, दीपावली (जब लक्ष्मी की विशेष रूप से पूजा की जाती है), स्कन्द-षष्ठी (जिस दिन स्कन्द ने देवताओं के शत्रुओं का नाश किया था), मकर-संक्रान्ति (जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है), रथ-सप्तमी, वसन्त-पंचमी (जब वसन्त ऋतु में फसलों की कटाई होती है), शिवरात्रि, होली (जिस दिन शिव ने कामदेव को भस्म किया था) के त्यौहार मनाना; वार्षिक पितृ-तर्पण करना (महालय श्राद्ध); विष्णु के विभिन्न अवतारों के सम्बन्ध में पवित्र माने जाने वाले दिनों को तथा महात्माओं के जीवन में पवित्रता अथवा ज्ञान के प्रकटीकरण से सम्बन्धित अवसरों पर श्रद्धांजलि अर्पित करना तथा पूजा करना आदि।

मृत आत्माओं के नाम पर किये जाने वाले कर्मकाण्ड भी अनेक हैं। दाहकर्म-संस्कार से इनका प्रारम्भ होता है। भगवत्प्राप्ति की स्थिति तक मृत आत्मा के ऊर्ध्वारोहण सम्बन्धी कृत्य इन कर्मकाण्डों की शृंखला की अन्तिम कड़ियाँ हैं। ये कर्मकाण्ड अत्यन्त जटिल हैं तथा इन्हें केवल वे ही व्यक्ति सम्पन्न कर सकते हैं, जिन्हें इनकी विधियों की पूर्ण जानकारी है।

पुरुषार्थ

भारत में मानव-जीवन को भौतिक क्षेत्र (अन्नमय जीवात्मा) से परमानन्द की प्राप्ति की ओर आत्म-उत्कर्ष की एक पुरोगामी प्रक्रिया माना गया है। मानवीय मूल्यों तथा लक्ष्य को चार पुरुषार्थों में विभाजित किया गया है। ये पुरुषार्थ हैं : **(१) धर्म**ह्वह्वसदाचार तथा उत्तमता को व्यवहार में लाना, **(२) अर्थ**ह्वह्वअर्थोपार्जन या आवश्यक भौतिक मूल्यों का उपार्जन करना, **(३) काम**ह्वह्वउत्तम साधनों द्वारा अनुज्ञेय कामनाओं की पूर्ति करना, तथा **(४) मोक्ष**ह्वह्वअन्त्य मुक्ति के लिए प्रयत्न करना। यह विश्लेषण ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में व्यक्तियों के विभिन्न स्तरों की समझ पर आधारित है।

महाभारत में धर्म के सिद्धान्त को संक्षेप में इस प्रकार बताया गया हैह्वह्वदूसरों के साथ वह व्यवहार न करो, जो व्यवहार तुम अपने साथ किया जाना नहीं चाहते। जो अपने लिए प्रतिकूल है, दूसरों के साथ अपने व्यवहार में उसका

स्थान नहीं होना चाहिए (**आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्**)। धर्म की दूसरी परिभाषा यह है कि यह वह आचरण है जो इहलोक में समृद्धि (अभ्युदय) तथा परलोक में आध्यात्मिक धन्यता (निश्रेयस) की प्राप्ति में सहायक होता है। वह उदार स्वभाव अथवा मनोवृत्ति ही धर्म है, जिससे संसार में अन्यों को अपनी सन्तुष्टि का साधन न मान कर लक्ष्य माना जाता है। इस प्रकार धर्माचरण मात्र कर्मकाण्ड नहीं है।

नैतिकता बाह्य कर्मकाण्डों की अपेक्षा श्रेष्ठ है। नैतिक कार्य तभी किया जा सकता है जब मन की दशा भी नैतिक हो। नैतिक भावनाओं तथा नैतिक कार्यों में वही अन्तर है जो स्वभाव और आचरण में होता है। हमारा नैतिक दृष्टिकोण इस सामान्य मत पर आधारित है कि संसार उस परिवार से बहुत बड़ा है जिससे हम साधारणतया परिचित होते हैं। हमारा अस्तित्व बड़े-बड़े रहस्यों से आवृत है तथा ऊपर से जितना जटिल दिखायी पड़ता है, उससे भी कहीं अधिक जटिल है।

तार्किक सीमाओं की पराकाष्ठा पर पहुँची हुई वैश्व दृष्टि के अनुसार समस्त प्राणी एक सार्वभौम, विश्व-व्यापक सहकारी जीवन की एक ही इकाई हैं। व्यक्ति और सामाजिक जीवन के अपेक्षाकृत छोटे दायरे में इस तथ्य को स्वीकार कर लेना ही धर्म है। इस सिद्धान्त का तिरस्कार करना ही अधर्म है। धर्म ब्रह्माण्ड की संघटित संरचना को उसी प्रकार सम्पोषित करता है, जिस प्रकार आकर्षण-शक्ति भूतद्रव्यों के घनत्व को सँभालती है। अधर्म इस संरचना में विघटन की स्थिति उत्पन्न करता है। यही स्थिति सर्वव्यापक अस्वास्थ्य की स्थिति है। यदि धर्म स्वास्थ्य है, तो अधर्म रोग है।

धर्म किसी विशेष देश या व्यक्तियों का पन्थ या रीति-रिवाज नहीं है। यह एक शाश्वत नियम है। समस्त गौण धर्म जिनमें सत्कर्म और उपासना के तत्त्व होते हैं, तभी सार्थक बन पाते हैं जब उनका ब्रह्माण्ड के सार्वभौम धर्म से सामंजस्य होता है। अर्थोपार्जन (अर्थ), कामनाओं की पूर्ति (काम) तथा मुक्ति-प्राप्ति (मोक्ष) धर्म पर ही आधारित रहते हैं। धर्म ही समस्त व्यावहारिक जीवन का शैल-आधार है। अर्थ, कामादि से सम्बन्धित हमारे प्रयास तब तक असफल होते रहेंगे, जब तक हम इस सत्य को स्वीकार नहीं कर लेंगे कि व्यक्ति ब्रह्माण्ड के साथ सह-विस्तृत (Co-Extensive) है।

(अनूदित)

कामना करने के पूर्व पात्रता अर्जित करो

एक दिन पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने एक रोचक कहानी सुनायीह्लएक घमण्डी बन्दर को एक मुकुट मिल गया। उसने मुकुट पहन लिया और अपने को जानवरों का राजा कहने लगा। एक चतुर लोमड़ी ने उसे देखा। उसने सोचा कि वह बन्दर को पाठ पढ़ायेगी। वह बन्दर को एक ऐसे जाल के पास ले गयी जहाँ फल रखे हुए थे। जैसे ही बन्दर ने फलों पर हाथ रखा, वह जाल में फँस गया। वह चिल्लाने लगा। तब लोमड़ी हँसी और बोलीह्ल''राजा बनने से पहले राजा के गुण तो अर्जित कर लो।''

यह कहानी सुना कर पूज्य गुरुदेव बोलेह्ल''आध्यात्मिक क्षेत्र में भी ऐसा ही होता है। साधक गण शक्ति और पद की कामना करने लगते हैं। वे गुरु बन कर दूसरों पर शासन करना चाहते हैं। विनम्रता, निःस्वार्थता, प्रेम तथा पवित्रता के गुणों को विकसित किये बिना यदि वे आध्यात्मिक गुरु बनना चाहेंगे, तो उनका वही हाल होगा, जैसा बन्दर का हुआ था। दूसरी ओर, यदि साधकों में पर्याप्त आध्यात्मिक शक्ति हो और उनका हृदय शुद्ध हो, तो सारा संसार उनका सम्मान करेगा, भले ही वे सम्मान प्राप्त करने की कामना न करें। साधक को कामना न करके, पात्रता अर्जित करनी चाहिए। उदाहरण के लिए समाधि का अनुभव उसे ही प्राप्त होता है, जो उसकी पात्रता अर्जित कर लेता है। समाधि का अनुभव प्राप्त करने की इच्छा रखने से ही कुछ नहीं होता।

मुझे मेरे गुरु कैसे मिले!

श्रीमती शिवानन्द उमानन्द (एलिसाबेथ रीटर), स्विटज़रलैंड

यदि मुझे कभी पहले कहा होता कि मैं भारत में बहुत महीनों तक रहूँगी, तो इसे बेतुकी बात मानते हुए मैं बहुत हँसी होती, क्योंकि मैंने ऐसी सम्भावना की कभी कल्पना भी न की थी। किन्तु भगवान् के ढंग निराले हैं।

एक सुबह मैंने स्वयं को अचानक ही अप्रत्याशित ढंग से अचंभित कर देने वाली अलौकिक घटनाओं के वशीभूत हुए पाया, और मैं समझ नहीं पा रही थी कि मुझे हो क्या रहा है। इन्हें झटक कर दूर कर देने के सभी प्रयास विफल हो गये तथा मैं और भी अधिक इन अकल्पनीय आध्यात्मिक प्रकटीकरणों की पकड़ में आती जा रही थी। अतः मैंने अब और अधिक देर तक स्वयं को न रोक कर भगवान् और उनकी कृपा के प्रति कृतज्ञता समर्पित की।

तभी से मेरा जीवन पूर्णतया परिवर्तित हो गया। मेरा हृदय तत्काल गुरु प्राप्त करने की इच्छा से परिपूरित हो गया। मेरी इच्छा पूर्ण हुई और मेरे श्रद्धेय गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी ने इस बात की पुष्ट भी की, कि ज्यों-ही उचित समय आता है, उसी क्षण प्रत्येक व्यक्ति को उसका गुरु मिल जाता है। और उचित समय वह है जब कि उसके हृदय में वास्तविक भक्ति एवं विश्वास उत्पन्न हो जाये।

उसके उपरान्त हमारा एकाकी घर जीवन्त हो उठा। बहुत से ऐसे लोग हमारे घर आये जो भारत में शिवानन्द आश्रम में महीनों तक रहे थे तथा अन्य बहुत से ऐसे भी आये जिनके हृदयों में योग के सम्बन्ध में, भारत के, और भारत के महान् सन्त स्वामी शिवानन्द जी के विषय में जानने की तीव्र इच्छा थी। हमें रंगीन चित्र देखने तथा स्वयं गुरुदेव की आवाज में मन्त्रोच्चारण की ध्वनि तथा भारतीय भजन 'टेपरिकार्डर' (ध्वन्यांकन मशीन) द्वारा सुनने के सुअवसर भी मिलने लगे। थोड़े ही दिन में हमने स्वयं उन भजनों का अनुकरण करते हुए साथ-साथ गाना और ध्यान करना भी प्रारम्भ कर दिया, तथा हमारा घर इस प्रकार शीघ्र ही शक्तिशाली आध्यात्मिक तरंगों से पूर्णतया भर गया।

और एक दिन कल्पनातीत बात मेरे समक्ष सत्य हो गयी। मुझे तीन मास के लिए भारत जाने और लगभग प्रतिदिन ही अपने प्रिय और श्रद्धेय गुरु श्री स्वामी शिवानन्द जी के पावन चरण-कमलों में बैठने तथा बहुत-कुछ सीखने का परम सौभाग्य प्राप्त हो गया। मुझे अद्भुत दिव्य शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त हो गया। सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने की सामर्थ्य मुझमें आ गयी।

मेरे श्रद्धेय गुरुदेव! पुनः मेरे भावपूर्ण एवं कृतज्ञतापूर्ण धन्यवाद तथा मेरे गहन प्रेम को स्वीकार करें! मन-ही-मन में मैं निरन्तर आपकी सन्निधि में हूँ और प्रायः आपके मनोहारी सत्संगों से पूर्ण सुन्दर सन्ध्याओं का स्वयं को भी एक भाग अनुभव करती हुई आपकी सुमधुर दिव्य हास की ध्वनि सुनती हूँ! मेरी प्रार्थना है कि आप हमारे जीवन की समस्त कठिनाइयों में हमें निर्देशित करते रहें तथा प्रकाश के निकट से निकटतर करते रहें, ताकि हम आपके सुयोग्य शिष्य बन सकें!

हे देवदूत! आप अपने निःस्वार्थ प्रेम तथा उज्ज्वल सत्य से आने वाले समय में सुदीर्घ काल तक इस संसार को प्रकाशित करते रहें!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

शिवानन्द-विजय ३

''आपके अन्तर में एक आवाज़ है जो आपसे कहती हैह्वह्वमैं शुद्ध चैतन्य ब्रह्म हूँ। इसको अब सुनें।''

श्री सुन्दरश्याम 'मुकुट'

अंक १
दृश्य २ (सारांश)

रक्षक के रूप में अवतरित हुए स्वामी शिवानन्द जी की जन्म-स्थली, दक्षिण भारत के एक हरे-भरे गाँव पत्तमडै का दृश्य। देव ऋषि नारद साधु-वेश में 'बाल-रूप में रक्षक' के दर्शन करने आते हैं। बालक शिवानन्द (कुप्पुस्वामि) अपने पिता, सन्त-स्वरूप एवं एकनिष्ठ शिव-भक्त श्री वेंगु अय्यर के साथ आते हैं। परस्पर वार्तालाप करते हुए ऋषिवर नारद भविष्यवाणी करते हुए बालक का भविष्य में एक महान् सन्देश-प्रदाता होने का महिमामयी वर्णन करके एवं आशीर्वाद दे कर करते हैं।

चरित्रों का परिचय

डा. कुप्पुस्वामि (श्री स्वामी शिवानन्द जी): नाटक के नायकह्वह्ववेंगु अय्यर के सुपुत्र, प्रारम्भ में एक चिकित्सक बाद में मानवता को जाग्रत करने हेतु जीवनोत्सर्ग करने वाले एक महान् सन्त।

अंक १

।। तीसरा दृश्य।।

स्थानह्वह्वग्राम का एक भाग

समयह्वह्वसन्ध्या

(बालकों का खेलते हुए प्रवेश। एक बालक घोड़े के रूप का अनुकरण कर रहा है। दूसरा उस पर सवार है। शेष सभी पीछे-पीछे गाते हुए चल रहे हैं।)

(गान)

सब बालकह्वह्व टिक टिक रे घोड़े चल।
टिक टिक रे घोड़े चल।।

एक बालकह्वह्व ले जा रे मुझ को दूर,
खाना दूँगा भरपूर।
देखूँ मैं तेरा बल,
टिक टिक रे घोड़े चल।।

दूसरा बालकह्वह्व रण में चल आज लड़ूँगा,
दुश्मन के वार सहूँगा।
मच जायेगी हलचल,
टिक टिक रे घोड़े चल।।

तीसरा बालकह्वह्व मैं राणा बन कर आया,
चेतक यह मैंने पाया।
भागा अकबर का दल,
टिक टिक रे घोड़े चल।।

चौथा बालकह्वह्व मैं राजा सुन लो भाई,
तुम सैनिक करो लड़ाई।
रण में डटना निश्चल,
टिक टिक रे घोड़े चल।।

सब बालकह्वह्व हम बालक वीर बड़े हैं,
रण में चल आज पड़े हैं।
बस कौन टिकेगा खल,
टिक टिक रे घोड़े चल।।

(बालक कुप्पुस्वामि आता है)

कुप्पुस्वामिह्वह्ववाह! यह भी कोई खेल है।

एक बालकह्वह्वखेल नहीं तो और क्या है?

दूसरा बालकह्वह्वयह मेरा घोड़ा है। (मुँह बनाता है)

तीसरा बालकह्वह्व(उछल कर सवार को धक्का देते हुए) देखो जी, यह बात ठीक नहीं। मैं तुम्हारा घोड़ा क्यों होता, तुम ही मेरे घोड़े होगे।

दूसरा बालकह्वह्वपर अब तो घोड़े ही हो, तुम भी तो मुझ पर सवार हुए थे। (क्रोध की मुद्रा में) धक्का क्यों दिया, गिर पड़ता तो चोट न लग जाती।

पहला बालकह्वह्वठीक है, धक्का क्यों दिया, अभी बाबू को पता चल जायेगा।

तीसरा बालकह्वह्वजवान सँभाल कर बोलो, मैं क्या तुमसे कुछ कम हूँ!

दूसरा बालकह्वह्वयदि ऐसी बात है तो आओ, दो-दो हाथ कर लें।

(दोनों लड़ने के लिए तैयार होते हैं)

कुप्पुस्वामिह्वह्व(हँसते हुए) अरे बाबा! तुम तो लड़ने भी लगे। (एक को पकड़ते हुए) हम भी जानते हैं कि तुम बड़े पहलवान हो। आपस में अच्छे बालक लड़ा नहीं करते!

पहला बालकह्वह्वनहीं जी, पकड़ते क्यों हो? आज हम इसका घमण्ड चूर करके रहेंगे। इसने कल मुझको भी धक्का दिया था। नाक से बड़ी देर तक खून बहता रहा।

दूसरा बालकह्वह्वयह तो खेल है, जो सवार होगा वह सवारी भी देगा, फिर कौन से तुम धन्ना सेठ हो जो हम तुम्हारे पैर चूमें। उंह, भैया कुप्पु! आज हमें अपने मन की निकाल लेने दो।

कुप्पुस्वामिह्वह्वअजी, मन की निकाल लेने को तो बहुत बड़ी आयु पड़ी है, अच्छे-अच्छे काम करो, पढ़ो-लिखो, बड़े आदमी बनो जिससे सब प्रशंसा करें। कोई लड़-भिड़ कर मन की थोड़े ही निकाली जाती है। दूसरे तुम लोग ऐसा खेल ही क्यों खेलते हो, इसमें तो इसी तरह लड़ाई होगी। कोई ऐसा खेल खेलो, जिससे हृष्ट-पुष्ट बन सको। मुझे नहीं देखते, तुम-जैसे सात को पीठ पर उठा सकता हूँ। (गर्व से मुँह फुलाता है)

पहला बालकह्वह्वहाँ, ठीक तो कहते हो। कल पिता जी भी यही कह रहे थे कि नन्नू तू दुबला-पतला है, व्यायाम किया कर। कुप्पु को देख (हाथ से संकेत करके) कैसा बना हुआ है! कुन्दन सा शरीर किसे सुन्दर नहीं लगता!

दूसरा बालकह्वह्व(अपने को देख कर, फिर कुप्पु की ओर देखता है) भैया कुप्पु, कहाँ तुम और कहाँ मैं। मुझे भी बताओ, तुम मोटे-ताजे किस तरह बने?

कुप्पुस्वामिह्वह्वमुझसे पूछते हो! तो सुनो, मैं नित्य प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में उठ कर सौ दण्ड मारा करता हूँ और खूब दूध, घी खा कर मस्त रहता हूँ, समझे? तुम दस बजे तो

सो कर उठते हो। बिना शौच जाये, बिना स्नान किये स्कूल उठ दौड़ते हो, भला स्वास्थ्य खराब न हो तो और क्या हो?

तीसरा बालक(सिर खुजलाते हुए) हाँ, भैया! कल मास्टर साहब ने मुझे बहुत मारा था, कहने लगे कि यदि स्कूल में फिर से देर करके आये तो कक्षा से निकाल दिये जाओगे और यह भी कहा कि तुम बड़े गन्दे रहते हो।

कुप्पुस्वामिवे क्या झूठ कहते हैं, तुम देर करके क्यों जाते हो? सूर्योदय से पहले उठा करो, देर कभी नहीं होगी। मैं व्यायाम, स्नान एवं सन्ध्या-पूजन आदि से निवृत्त हो कर ठीक स्कूल के समय तक पहुँच जाता हूँ। (उसकी आँखों की ओर देख कर) मालूम होता है कि श्रीमान् जी को आज मुँह भी धोने का समय नहीं मिला।

तीसरा बालकहाँ! दस बज कर पच्चीस मिनट पर तो आँख ही खुली थी, मुँह कब धोता!

कुप्पुस्वामिआँख क्या खुली होगी, बाबू जी के चपत का परिणाम होगा।

सबह ह ह ह (हँसते हैं)

कुप्पुस्वामिहँसते क्या हो! तुम लोगों का भी तो यही हाल है। अरे मित्रो! नित्य प्रातःकाल उठ कर व्यायाम किया करो, स्नान करके थोड़ा भगवन्नाम लिया करो। उसके पश्चात् भोजन करके स्कूल जाओ। न तुम्हें कभी देर होगी और न कभी तुम्हारा स्वास्थ्य ही खराब होगा। मेरी बात गिरह में बाँध लो, सारी आयु सुखी रहोगे मेरे बहादुरो!

पहला बालकऔर कोई कुप्पु भैया की बात माने न माने, मैं तो मानूँगा ही।

शेष बालकहूँ! तुम क्या, हम भी मानेंगे, इन्होंने तो हम सबके लाभ की बात कही है।

कुप्पुस्वामिअच्छा, मैं तो जाता हूँ, तुम जानो।

दूसरा बालकठहरो भैया, हम भी चलते हैं। (तीसरे से) देखो, कल सवारी देनी पड़ेगी!

तीसरा बालकबस हवा खाओ।

कुप्पुस्वामिअजी, कल तो आने दो, झगड़ते क्यों हो!

(सबका प्रस्थान)

(पट-परिवर्तन)

(क्रमशः)

एक बोध कहानी : पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की जबानी

एक लखपति था अत्यन्त अधार्मिक तथा दम्भी। एक बार भगवान् कृष्ण तथा अर्जुन उसके पास छद्मवेश में गये। उसने उनको अपमानित करके भगा दिया। भगवान् कृष्ण ने शान्त भाव से कहा "भगवान् करे, तुम करोड़पति हो जाओ!"

फिर भगवान् कृष्ण और अर्जुन एक निर्धन व्यक्ति के घर गये। उसके घर में गाय के अतिरिक्त और कुछ न था। उसने उन दोनों का आदर-सत्कार किया। चलते समय भगवान् ने श्राप दिया "तुम्हारी यह एकमात्र सम्पत्ति गाय शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो!"

बाद में अर्जुन ने भगवान् कृष्ण से पूछा "भगवन्, आपका व्यवहार बड़ा विचित्र था!"

भगवान् कृष्ण ने कहा "मेरा व्यवहार बिलकुल उचित था। जब वह लखपति करोड़पति बनेगा, तब उसे अनेक कष्टों का सामना करना पड़ेगा। तब उसे मुझ भगवान् का विस्मरण हो जायेगा। वह निर्धन भक्त अपनी गाय में इतना अधिक आसक्त है कि उसकी आसक्ति ही उसकी भक्ति में बाधक बन रही है। उस गाय से मुक्ति पा कर वह निर्बाध भक्ति कर सकेगा।" भगवान् अपने पास बुलाने के लिए कभी-कभी भक्त की प्रियतम वस्तु छीन लेता है। भगवान् जो-कुछ करता है, भले के लिए ही करता है।

गुरु कौन हैं

विद्याभास्कर, प्रो. श्री एम. रामकृष्ण भट्ट, एम. ए.

गुरु शब्द का अर्थ है प्रभावशाली शिक्षक, पिता, बड़ा और गुरु इत्यादि। यह 'गृ' धातु से उद्धृत किया गया है जिसका अर्थ है गाना अथवा प्रशंसा करना। संस्कृत में ऐसे व्यक्ति के लिए 'पुण्यश्लोक' शब्द प्रयोग किया जाता है। अतः गुरु सम्माननीय अथवा श्रद्धेय व्यक्ति माने जाते हैं। यही कारण है कि पिता, ज्येष्ठ व्यक्ति, शिक्षक अथवा इनके समान व्यक्ति पूजनीय माने जाते हैं। गुरुगीता के अनुसार सच्चे गुरु की पहचान निम्नांकित गुणों से मानी जाती है : पवित्रता, प्रशान्ति, विवेक, श्रेष्ठता, वाणी की संयमितता, काम-क्रोध पर विजय, सदाचरण तथा आत्मसंयम। ऐसे व्यक्ति को हम देहधारी भगवान् मानते हैं, जो लोगों के मध्य उनके दोषों को दूर करने के लिए तथा जीवन के प्रति बाह्य और भीतरीद्वद्वदोनों ही प्रकार के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिए विचरण करता है। कई बार व्यक्ति के अपने ही माता या पिता गुरु के रूप में यह कार्य करते हैं।

जिस प्रकार नदी पार करने के लिए हमें नाविक की आवश्यकता होती है, जिस प्रकार अन्धे को मार्ग बतलाने के लिए निर्देशक की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार संसार-सागर से पार उतारने के लिए पापी जीवों को गुरु की आवश्यकता होती है। हमारे सद्ग्रन्थ उद्घोषणा करते हैं कि परमात्मा, जो कि अन्तर्यामी एवं अनुभवातीत है, मानव के माध्यम से कार्य करता है। गुरु को हम ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव स्वरूप मानते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने हृदय-मन्दिर को पावन तथा भक्ति-दीप से प्रकाशित रखें। साथ ही हमें अपने हृदयों में से तुच्छ विचारों और पूर्व-धारणाओं (जो कि ईश-कृपा-रूपी प्रकाश के प्रवेश में सदृढ़ दीवारें हैं) को दूर फेंक कर हृदय-द्वारों को खुले रखना चाहिए। अपने अज्ञान से विमोहित हुए हम समझते हैं कि हम सब-कुछ कर रहे हैं, जब कि घर के मालिक के अस्तित्व को ही भुलाये रहते हैं।

हम यह जानते हैं कि बहुतों को इस संसार-प्रपंच में मन को एकाग्र करके भगवान् पर लगाना तथा मन को शुद्ध बनाना अत्यधिक कठिन है। अतः हमें गुरु की आवश्यकता होती है जो हमें दिव्य जीवन के मूल सिद्धान्तों के प्रति प्रारम्भिक ज्ञान दे सके, हमें निर्दिष्ट कर सके। हमारा मन प्रारब्धवश हमारे अनेक प्रयत्न करने पर भी प्रभु-चरणों में संलग्न होने में आनाकानी करता रहता है। यहीं पर प्रभु-इच्छा से गुरु हमारे जीवन में प्रवेश करते हैं तथा दिव्य जीवन के पथ पर प्रत्येक कदम पर हमें निर्देश देते हैं।

गुरु दो प्रकार के होते हैं : परमात्मा के अवतार तथा दूसरे भगवद्-स्वरूप प्राचीन सन्त-महात्मा। इनमें प्रथम की कृपा अमृताप्लावित उस नदी के समान है जो आस-पास के सम्पूर्ण क्षेत्र को जलमग्न कर देती है, जब कि दूसरे की अमृत के विशाल सरोवर की भाँति है। श्री रामकृष्ण परमहंस कहते हैं कि पावन गंगा की ओर से आने वाली वायु भी पावन आध्यात्मिक गुण सम्पन्न होती है जो पास से निकलने वाले पथिकों को श्रेयस एवं प्रेयसद्वद्वदोनों ही प्रदान करती है। इसी प्रकार हमारे गुरुमहाराज श्री स्वामी शिवानन्द जी कहते हैं कि हिमालय का वातावरण सहज स्वाभाविक ही आध्यात्मिक है। इसी प्रकार गुरु के चतुर्दिक् का वातावरण ऐसा होता है जो सभी को, बिना किसी भेदभाव के पवित्र, उदात्त, संयुक्त, उन्नत तथा परिवर्तित कर देता है। गुरु अनधिकारी अथवा अपात्र को भी भलाई एवं पवित्रता के मार्ग पर अग्रसर करने के लिए उस पर कृपा-वृष्टि करके अनौचित्यता एवं दुष्टता को निकाल देता है। तब भक्तों पर वह विशेष कृपा क्यों नहीं करेगा? अवश्यमेव करेगा।

'गुरु' के शब्द सर्वशक्तिमान् परमात्मा के आदेश से भी कहीं अधिक शक्तिशाली हैं। इससे सम्बन्धित अनेकों उदाहरण हैं। इससे आशीर्वाद तथा वरदान शब्दों के अर्थों में भेद स्पष्ट हो जायेगा। सामान्यतया बड़े व्यक्ति आशीर्वाद देते हैं, जब कि गुरु वरदान देते हैं जो कि अपरिमित तथा आशातीत होते हैं। हम सब अपने गुरुदेव, श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की उस विलक्षण कृपा से आशीर्वादित हों!

(अनुवादिका : श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी)

बाल-स्तम्भ :

मोटी आंटी ३

स्वामी रामराज्यम्

(बच्चो, इस धारावाहिक कहानी में तुम पढ़ रहे हो मोटी आंटी के जीवन से जुड़े हुए कुछ प्रेरक प्रसंग। प्रत्येक प्रसंग एक मोती की तरह है, जो मन की पिटारी में सँभाल कर रखने योग्य है। इन मोतियों का धन तुम्हारी जीवन-यात्रा में बहुत काम आयेगा।)

३. भगवान्! तुम्हें धन्यवाद; बहुत-बहुत धन्यवाद

संकटमोचन हनुमान मन्दिर के लम्बे-चौड़े अहाते में हर साल गरमी के मौसम में एक बहुत बड़ा मेला लगा करता थाह्वह्वलगातार एक सप्ताह तक। एक साल मेला लगने के दूसरे दिन ही हैजा फैल गया। सरकारी अस्पताल का एक पूरा वार्ड हैजा के रोगियों से भर गया। मोटी आंटी ने जब यह समाचार सुना, उस समय भरी दुपहरिया का सूरज तप रहा था। वह तुरन्त अस्पताल जाने के लिए उठ खड़ी हुईं। मैंने पूछाह्वह्व''मोटी आंटी, मैं भी चलूँ?''

''नहीं, तू मत चल।''

''तुम मुझे हमेशा अपने साथ ले चलती हो। आज क्यों मना कर रही हो?'' मैंने पूछा।

''नहीं, तू रहने देह्वह्व'' कह कर मोटी आंटी तेजी से चली गयीं।

शाम को मोटी आंटी टैक्सी से दस-बारह साल की एक बीमार लड़की को ले कर घर लौटीं। अपने साथ ढेर-सी दवायें भी लायी थीं। कमरे में पहुँचते ही उन्होंने उसे खाने के लिए गोलियाँ दीं और लिटाल दिया। उसके सिरहाने बैठ-बैठे वह उसका सिर सहलाती रहीं। जल्दी ही वह सो गयी।

फिर मोटी आंटी ने अपने एक परिचित डाक्टर को फोन किया। वह एक प्राइवेट हास्पिटल में काम करते थे। फोन पर मोटी आंटी ने उस लड़की का पूरा हाल बताया और कहाह्वह्व''सारे जरूरी सामान और दवाओं के साथ तुरन्त आ जाओ।'' डाक्टर अपनी कार से जल्दी ही आ गये। अपने साथ ग्लूकोस चढ़ाने का स्टैंड भी ले आये। उन्होंने लड़की को एक इंजेक्शन दिया। कुछ गोलियाँ खाने के लिए दीं। फिर उस लड़की को ग्लूकोस चढ़ाया जाने लगा। मोटी आंटी बोलींह्वह्व''डाक्टर अरुण, बड़ा डाक्टर भगवान् है। छोटे डाक्टर तुम बनो। इस लड़की को इस परिवार की बेटी मान कर इलाज करो।''

डा. अरुण चले गये। थोड़ी देर बाद लड़की ने आँखें खोलीं। वह लड़की रोने लगी और अपने घर जाने की जिद करने लगी। मोटी आंटी ने उसे धीरज बँधाया और उसका नाम-पता पूछा। उसके घर का फोन नम्बर पूछा। उसके परिवार वालों के बारे में पूछा। उसने सब-कुछ बताया। यह भी बताया कि वह अपने अब्बा के साथ रहती है। अपने मुहल्ले की सहेली कमला और उसके भाई के साथ मेला देखने आयी थी। मेले में उनका साथ छूट गया।

मोटी आंटी ने उसके पिता को फोन किया। फोन पर कहाह्वह्व''करीम भाई, तुम्हारी बेटी गुल मेरे घर में है। उसे हैजा हो गया है, इलाज चल रहा है। तुम परेशान न होना। मुझे लोग मोटी आंटी के नाम से जानते हैं। मन्दिर रोड पर कोठारी ट्रेडर्स के सामने ही मेरा २०३ नम्बर का मकान है।''

करीम बेटी को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते परेशान हो रहा था। वह मोटी आंटी के घर पहुँच गया।

गुल ने करीम को देखा तो अब्बा, अब्बा कह कर रोने लगी।

मोटी आंटी ने उससे कहाह्न''यह गुल मुझे सरकारी अस्पताल के सामने बैठी हुई मिली थी। यह रो रही थी और वमन भी कर रही थी। अस्पताल में जगह नहीं थी। इसलिए वहाँ से इसे मैं घर ले आयी। अब तुम गुल को मेरे पास छोड़ दो। मेरे ऊपर भरोसा करो। मैं माँ बन कर उसकी सेवा करूँगी। उसको अच्छा करके तुम्हारे पास भेज दूँगी।''

कुछ देर तक करीम चुपचाप खड़ा रहा। कभी वह गुल को देखता था, कभी मोटी आंटी को। मोटी आंटी समझ गयीं कि वह असमंजस में है। वह बोलींह्न''करीम भाई, तुम्हारे संकोच को मैं समझती हूँ। तुम्हारे मुहल्ले के डाक्टर तिवारी, बड़ी मसजिद के मुल्ला जीह्नये लोग मुझे जानते हैं। उनसे मेरे बारे में पूछ लेना। मेरी बात मानो, गुल को यहीं छोड़ जाओ। मैं उसकी पूरी देख-भाल करूँगी। तुम रोज आ कर उससे मिल लिया करना।''

फिर गुल के सिर पर हाथ फेर कर करीम लौट गया।

तीन-चार दिनों तक गुल का इलाज चलता रहा। डा. अरुण रोज उसे देखने के लिए आये। करीम भी उससे मिलने के लिए आता रहा। मोटी आंटी ने उसकी खूब सेवा की। जब तक वह सेवा करती रहीं, वह गुल के पास रहीं। डा. अरुण ने कह दिया था कि हैजा छूत का रोग है। इसलिए मोटी आंटी ने मुझे पास नहीं आने दिया।

एक दिन जब गुल का अब्बा आया हुआ था, तब मोटी आंटी ने गुल से कहाह्न''अब तू अच्छी हो गयी है। आज तू अपने अब्बा के साथ घर वापस जायेगी।''

करीम बोलाह्न''आंटी, यह बिना माँ की बेटी है। तुमने माँ बन कर इसकी सेवा की है। इसे भुला नहीं देना।''

मोटी आंटी गुल को प्यार से चिपटा कर बहुत देर तक उसके सिर पर हाथ फेरती रहीं।

गुल को ले कर चलते समय करीम की आँखों में आँसू थे। गुल बार-बार पीछे मुड़ कर मोटी आंटी को देख रही थी। कुछ दूर जा कर एकाएक अपने अब्बा का हाथ छुड़ा कर वह भागी-भागी वापस आयी और मोटी आंटी से चिपट गयी। मोटी आंटी दोबारा उसके सिर पर हाथ फेरने लगीं।

थोड़ी देर बाद गुल चली गयी। उस समय मैं मोटी आंटी के पास ही खड़ा था। वह वहीं सीढियों पर बैठ गयीं। मुझे भी पास में बैठा लिया। मुझसे कहने लगींह्न''उस दिन यहाँ से मैं सीधे सरकारी अस्पताल ही गयी थी। वहाँ एक अलग वार्ड में हैजा के मरीजों को रखा गया था। उस वार्ड में मक्खियाँ ही मक्खियाँ थीं। बेडों के चादर वमन और मल से गन्दे हो रहे थे। मैं चादरें साफ करने में जुट गयी। अस्पताल की नर्सें मुझे जानती थीं। वे कहने लगींह्न'यहाँ मौत नाच रही है। तुम यहाँ से चली जाओ आंटी।' मैं नहीं गयी। दस-बारह चादरें धो कर ही उठी। आज गुल बिलकुल अच्छी हो कर यहाँ से गयी है। मुझे बहुत खुशी हो रही है।'' यह कह कर उन्होंने आसमान की ओर देखते हुए हाथ जोड़े और कहने लगींह्न''भगवान्! न डा. अरुण ने कुछ किया, न मैंने। सब-कुछ तुम्हीं ने किया। तुम्हें धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद।''

मोटी आंटी की सेवा में एक आकर्षण था। उसी के कारण लोग उनके पास खिंचे हुए चले आते थे। बाँसुरी बजाने वाले उस अन्धे आदमी की तरह करीम भी हर दूसरे-तीसरे दिन गुल के साथ मोटी आंटी के घर आने लगा। मुझे यह कभी नहीं लगा कि गुल को मोटी आंटी ने पराये घर की बेटी मान कर प्यार दिया। जब भी वह आती थी, मोटी आंटी के पीछे-पीछे घूमती रहती थी। उन्हीं के साथ बैठ कर खाना खाती थी। उन्हीं के बिस्तर पर लेट कर सो जाती थी। अपने घर से आती थी, तो हँसते हुए आती थी। लौटती थी, तो आँखों में आँसू भर कर लौटती थी। मोटी आंटी से कहती थीह्न''मेरा घर तो यह है। तुम मुझे यहाँ से क्यों बार-बार भेज देती हो?''

(क्रमशः)

क्या गुरु का कभी देहावसान होता है?

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

इंग्लैण्ड के राजतन्त्र में एक महान् परम्परा है कि 'सिंहासन कभी रिक्त नहीं रहेगा; देश कभी भी बिना राजा के नहीं रह सकता।' मरणासन्न राजा के अन्तिम श्वास लेते ही तुरन्त उत्तराधिकारी को राजा बना दिया जाता है और घोषणा की जाती हैह्नह्न''राजा की मृत्यु हो गयी है। राजा की दीर्घायु हो!'' यह अयुक्ताभास लगता है, पर नहीं : राजा की मृत्यु हो गयी है, पर राजा अनुपस्थित नहीं है, क्योंकि उत्तराधिकारी ने उस राज्य के राजा के रूप में स्थान पा लिया है।

इस घोषणा पर विचार करें, ''राजा की मृत्यु हो गयी है, राजा की दीर्घायु हो।'' जब लौकिक व्यवस्था में राजा एक क्षण के लिए भी अनुपस्थित नहीं रहता, तो क्या आध्यात्मिक क्षेत्र में इस प्रकार का अभाव रह सकता है? क्या उनकी उपस्थिति की खोज होती है? क्या हम इस सोच के लिए हैं कि हम बिना गुरु के हैं, गुरु का देहावसान हो गया है? गुरु था और अब नहीं है? क्या हम इंग्लैण्ड की सकारात्मक परम्परा से किसी प्रकार कम हैं? क्या लौकिक तन्त्र एक पग आगे है और हम एक पग पीछे हैं? यह चिन्तन हास्यास्पद है कि ऐसा भी हो सकता है।

गुरु कभी गतप्राण नहीं हो सकते; क्योंकि वह अपने शिष्यों के माध्यम से जीते हैं। वह इसीलिए इतना जीवन्त हैं कि वह अपने आदर्शों, अपने विचार, दृष्टि, प्रवृत्ति और धर्मबुद्धि के रूप में अपने शिष्यों के माध्यम से अपना जीवन व्यतीत करते हैं। जीवन के लक्ष्यों और उद्देश्यों को पाने के लिए निरन्तर अथक परिश्रम करते रह कर शिष्य अपने गुरु को जीवित रखते हैं। मोमबत्ती का चमकता हुआ प्रकाश दूसरी मोमबत्ती को प्रकाश देने पर उसका प्रकाश कभी कम नहीं होता। वह स्वयं बुझ कर कभी दूसरी मोमबत्ती के माध्यम से पूर्ण प्रकाश के साथ प्रकाशित रहती है।

इसका ध्यानपूर्वक मनन करें। आप ही वह व्यक्ति हैं जिसके माध्यम से गुरु जीवित हैं। यह गौरव की बात है। आपको यह सुविधा मिली है। यह एक बड़े सौभाग्य की बात है। यह एक उत्तरदायित्व भी है; यह एक कर्तव्य है; यह एक सत्य है जिसे समझ कर उसे सदा मन में रखना हैह्नह्न''मुझे उसी प्रकार का जीवन-निर्वाह करना चाहिए, जैसी गुरु ने मुझे शिक्षा दी थी। मुझे उसी प्रकार का जीवन जीना चाहिए, जैसा मेरे गुरु जीते थे।'' लेकिन...

किसी भी तरह से 'लेकिन' तो सदा रहता ही है। आप अपनी पहली घोषणा को फिर से 'लेकिन' नहीं कर सकते; लेकिन गुरुदेव ने

वस्तुत: स्वयं अनेकों बार कहा हैह्वह्व''जो मैंने किया है, उसे मत करो; पर जैसा मैं कहता हूँ, वैसा करो। जो मैं आपसे कहता हूँ, वैसा करो। मैंने आपको कुछ निर्देश दिये हैं, उनका पालन करो। मेरी नकल करने की आवश्यकता नहीं है। आप मेरी समानता कर सकते हो। आप मेरे स्वभाव के अनुरूप अपना स्वभाव, चरित्र, मेरे-जैसी उदात्त आदर्श दिनचर्या, मेरे-जैसा आध्यात्मिक व्यक्तित्व बना सकते हो। पर मेरी नकल मत करो। स्पर्धा करो। जिज्ञासा करो।''

नकल करना और स्पर्धा करना, ये दो शब्द हैं। प्रत्येक शिष्य को इन दोनों के बीच के भेद को समझ लेना चाहिए। शंकराचार्य ने अपने सिर पर अपने कपड़े को एक प्रकार से रखा था। आज बहुत से व्यक्ति उस प्रकार से अपने सिर पर कपड़ा रख कर उनकी नकल करते हैं। इसे शिष्यत्व नहीं कहते, इसे आध्यात्मिक समानता नहीं कह सकते; उन्होंने अपनी पुस्तक 'विवेकचूडामणि' और 'आत्मबोध' लिखते समय ऐसा नहीं सोचा होगा कि वह उसे इस रूप में लेंगे। उन्होंने पहनावे की नकल करने के लिए नहीं लिखा होगा। यदि इस रूप में गुरु के समान रहने का निश्चय करेंगे, तो आपको बुरी तरह से असफल होना पड़ेगा।

गुरु आपके हृदय में निवास करते हैं, उनका उदात्त आशीर्वाद, उनकी आध्यात्मिक शिक्षाओं की गूँज आपको अपने भीतर आध्यात्मिक विकास के रूप में करनी चाहिए। उनके चरित्र और आचरण की उदात्तता आपके मन में बसनी चाहिए। उनका दिव्य स्वभाव तथा जैसा दिव्य जीवन उन्होंने जिया है, वैसे ही आपको रहने के लिए अपना मन बनाना चाहिए। आपको देख कर ही आपके गुरु के देवत्व की पहचान हो जाये, ऐसा जीवन व्यतीत करना चाहिए।

गुरुदेव ने इसीलिए कहा हैह्वह्व''मैंने आपसे जो-कुछ कहा है, वह करो। वह मत करो जो मैं करता था; क्योंकि मैं उसे दूसरे स्तर से करता था।'' गुरुदेव ने यह भी कहा थाह्वह्व''आदर करने की अपेक्षा आज्ञा-पालन करना अच्छा है।'' इसी प्रकार यदि शिष्य अनुकरण और स्पर्धाह्वह्वदोनों के भेद को जानता है, तो उसे उत्साह के साथ अनुकरण और आज्ञा-पालन करना चाहिए, तब गुरु का देहावसान कभी नहीं होगा। जब तक आप सब उनके-जैसे सच्चे संघर्षरत, सदा अपने विचारों, शब्दों और कार्यों से उनकी शिक्षाओं के सारतत्त्व को ग्रहण करके दिव्य जीवन के पथ पर चलने के लिए तत्पर हैं, तब तक गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी जीवित रहेंगे।

कौन कह सकता है कि स्वामी शिवानन्द जी थे और अब नहीं हैं। वह हैं तथा सदा रहेंगे। क्यों? क्योंकि आप सभी उनका प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, उनका प्रकाश अब आपका प्रकाश है; उनका उत्तम पक्ष, उनका दिव्य जीवन सभी कुछ अब आपका अंग है। इसलिए वह जिस प्रकार से रहते थे, उसी स्वरूप को उनके शिष्य, सैकड़ों-सहस्रों व्यक्तियों को उसी प्रकार से रहने की प्रेरणा दे रहे हैं।

यह एक बहुत बड़ी सुविधा है। यह एक महान् गुरु-सेवा है। आप भी इसी प्रकार से स्वयं को व्यस्त रखें। ईश्वर करे, आप हर चरण पर विवेक के साथ उत्साहपूर्वक उनका अनुकरण करते रहें। ऐसा न हो कि उनकी नकल करते हुए कहीं मार्ग से भटक न जायें।

यदि इंग्लैण्ड के लिए राजा नहीं मर सकता, तो आध्यात्मिक संसार में गुरु भी कभी नहीं मर सकता। शिष्य गुरु के प्रकाश को सुरक्षित रखता है। गुरु की प्रेरणा, ज्ञान की शिक्षाएँ अनन्त काल तक मानव-समाज के सभी मनुष्यों में पूरी तरह से गुरु को उपस्थित रखेंगी।

गुरु अपने प्रत्येक शिष्य के माध्यम से प्रकाशित हो कर जीवित रहते हैं। इसीलिए आप सभी स्वामी शिवानन्द जी के आदर्श और दिव्य जीवन के जीवित प्रकाश हैं। ईश्वर करे, परमेश्वर और गुरुदेव की कृपा और आशीर्वाद से आप बड़े प्रभावशाली ढंग से पूर्णतया सफलता के साथ सारी मानव-जाति के कल्याणार्थ ऐसा करने में सफल हों!

(अनुवादिका : श्रीमती आशा गुप्ता)

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

श्री गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा एवं आशीर्वाद से दिव्य जीवन संघ मुख्यालय लक्ष्मणझूला के निकट स्थित 'शिवानन्द होम' के माध्यम से अपनी सतत सेवा में संलग्न है। यह ऐसे आवास विहीन लोगों को चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध करवाता है जिन्हें बीमार होने के कारण भरती हो कर चिकित्सा करवाने की आवश्यकता है।

वह एक उज्ज्वल आत्मा थी। एक ऐसा सितारा थी जो हम सब पर अपना दिव्य प्रकाश प्रतिबिम्बित कर रहा हो। और 'होम' की सभी अन्तेवासी महिलाएँ उसका अभाव महसूस कर रही हैं। भरती होने के समय ही उसकी स्थिति अत्यन्त शोचनीय एवं सुधार होने से परे थी। उसके दोनों फुफ्फुस तथा आमाशय तपेदिक-ग्रस्त थे, हृदय-वर्द्धित था तथा गुर्दे काम करना बन्द कर चुके थे। भार उसका कुल २३ किलोग्राम था और आयु २०-२५ वर्ष की। वह जीने के लिए प्रति क्षण संघर्ष कर रही थी, किन्तु जितने क्षण भी जीवन जी रही थी वह मानो प्रत्येक पल पूर्णता से जी रही थी...एक बार, बहुत पहले 'अवैध बाल-व्यापार' की शिकार हो जाने पर बीड़ी बनाने के धन्धे में काम करती रही थी। जब यह सड़कवासी हो गयी उस समय जो-कुछ भी इसके पास था वह सब-कुछ समाप्त हो चुका था...अब कुछ भी ऐसा नहीं था जिसे अपना कहा जाये, जिसे सँभाला जाये...अब दिखाने भर के लिए बनावट की भी कुछ आवश्यकता शेष नहीं रही थी। कुछ भी ऐसा नहीं रहा था जो जीने के लिए आवश्यक समझा जाता है।

''प्रभु मेरा जीवन हैं और मेरे उद्धारक हैं; मुझे किसका भय? प्रभु मेरे जीवन की शक्ति हैं; फिर मैं किसी से क्यों भयभीत होऊँ? जब मेरे पिता और माता भी छोड़ देंगे, तब मेरे प्रभु ही मेरी देख-रेख करेंगे।'' (भजन २७, ओल्ड टैस्टामैंट)

जो शेष बचा वह कितना पवित्र, सच्चा नन्हा जीव था! भले ही 'शिवानन्द होम' में उसे ऑक्सीजन मशीन से लगा कर रखा गया था, किन्तु डाक्टरी इलाज चलते रहने के साथ ही वह गाने का प्रयत्न करती रहती थी। किसी दिन, जब उसकी स्थिति किंचित् अच्छी होती और श्रीकृष्ण भगवान् का भजन चल रहा होता, तब वह कमरे के बीचोंबीच दोनों बाहें ऊपर उठा कर नृत्य करने लगती इतना मग्न हो कर कि सारे वस्त्र तक उतार देती जिससे कि उसके आनन्द में कोई अड़चन न हो, कुछ उलझन न हो, क्योंकि अब यह विचार करने की भी आवश्यकता शेष नहीं रही थी कि उसके बारे में दूसरे क्या सोचेंगे...बस वह थी और उसके प्रभु, केवल 'उन' में ही पूर्णतया स्थित। और अन्य किसी दिन वह अपना समस्त एकत्रित क्रोध व्यक्त करती...अपने प्रभु की ओर क्रोधपूर्ण मुद्रा में तरह-तरह की भाव-भंगिमाएँ अभिव्यक्त करते हुए, बर्तन इधर-उधर फेंकते हुए...जितने भी थोड़े से समय का उसका जीवन था, उसने उसे भरपूर जिया। जीवन के सभी पहलुओं का उसने निर्भीकतापूर्वक सामना किया। गहन कष्ट और उत्कट पीड़ा अत्यन्त निकटता से सच्ची प्रसन्नता और असीम आनन्द से मिले!

इस नन्हीं-सी लड़की से मिलना, इसे जान पाना, एक सौभाग्य ही थाह्नह्नकैसे उसने अपने संघर्ष के प्रति विरक्ति तथा 'उस एकमात्र जीवन्त सत्य' के प्रति गहन आसक्ति दिखायी; उस समय के प्रति जिसे एक और केवल एकमेव सत्ता के रूप

में उसने अपने निजी अनुभव से जाना था! अन्तिम श्वास छोड़ने से कुछ ही पहले उसने भरपेट भोजन किया और फिर अत्यन्त शान्तिपूर्वक चली गयी। इस प्रार्थना के साथ कि 'वह' इस पावन आत्मा पर कृपा करें और शाश्वत शान्ति दें, उसे गंगाजल दिया।

ॐ शान्ति! शान्ति! शान्ति!

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।।

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

मुख्यालय आश्रम में स्कन्द-षष्ठी महोत्सव

''भगवान् कार्तिकेय दिव्य कृपा के साकार स्वरूप हैं। यदि आप निश्छल हृदय से भाव सहित उनके शरणापन्न हो जायें, तो वह आप पर तत्काल कृपा-वृष्टि कर देंगे।'' *(सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)*

स्कन्द भगवान् की आसुरी शक्तियों पर महान् विजय प्राप्ति का आनन्दपूर्ण शुभ-अवसर, स्कन्द-षष्ठी, मुख्यालय आश्रम में २७ अक्तूबर से १ नवम्बर २०११ तक अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साहपूर्वक मनाया गया। भजन हाल में स्थित स्कन्द भगवान् का मन्दिर, पावन उपासना स्थली थी। प्रथम पाँच दिनों में प्रतिदिन स्कन्द भगवान् की अभिषेक, अलंकार, वैदिक मन्त्रों सहित पुष्पार्चना एवं भजन-कीर्तन सहित पूजा की जाती थी। अन्त में महा आरती तथा विशेष प्रसाद वितरण किया जाता था। प्रतिदिन सायंकाल में भी स्कन्द भगवान् का महिमा-वर्णन एवं स्तुतिपरक भजन-कीर्तन किया जाता था।

१ नवम्बर २०११, स्कन्द-षष्ठी के दिन प्रातः माँ गंगा के तट पर स्थित गणपति मन्दिर से भजन-कीर्तन सहित कावड़ी यात्रा प्रारम्भ हुई जो समाधि-मन्दिर से होते हुए भजन हाल में पहुँची। इसके उपरान्त स्कन्द भगवान् का अभिषेक, अर्चना तथा आरती की गयी। षड्कुमारों की षड्मुखी स्कन्द भगवान् के प्रतीक रूप में पूजा की गयी तथा उन्हें भोजन, उपहार एवं दक्षिणा भी भेंट की गयी। पावन प्रसाद वितरण सहित पूजन सम्पन्न किया गया।

भगवान् स्कन्द एवं सद्गुरुदेव की हम सब पर कृपा-वृष्टि हो, जिससे कि हम इसी जन्म में दिव्य परिपूर्णता प्राप्त करने की आन्तरिक आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कर सकें!

एक माह के प्रथम योग सर्टिफिकेट कोर्स का उद्घाटन कार्यक्रम

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के द्वारा योग कक्षाएँ, योग शिविर एवं बाल शिविर आयोजित करने के लिए शिक्षक तैयार करने के उदात्त उद्देश्य को ले कर एक माह के प्रथम योग सर्टिफिकेट (प्रमाण-पत्र) कोर्स का उद्घाटन १ नवम्बर २०११ को योग-वेदान्त फॉरेस्ट एकाडेमी वाचनालय में किया गया। इसमें भाग लेने के लिए ११ विभिन्न प्रान्तों से कुल २७ विद्यार्थी आये।

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने अपनी दिव्य उपस्थिति दे कर कार्यक्रम की शोभा में वृद्धि की। कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ दुर्गा तथा दत्तात्रेय भगवान् के मन्दिरों में पूजा से हुआ। जय गणेश प्रार्थना तथा गुरु स्तोत्र-पाठ के उपरान्त श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज (कुलसचिव, एकाडेमी) ने सभी उपस्थित श्रोताओं का हार्दिक स्वागत किया। फिर कोर्स के शुभारम्भ के प्रतीक-दीप का प्रज्वलन परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने किया।

उसके उपरान्त श्री स्वामी अखिलानन्द जी महाराज ने विद्यार्थियों को सबसे परिचित करवाया।

परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने उद्घाटन प्रवचन में हठयोग का महत्त्व विद्यार्थियों को बताते हुए इसका नित्य अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में योग की विभिन्न परिभाषाओं की व्याख्या की तथा विद्यार्थियों से इस कोर्स का एक अंग बनने के सुअवसर का सर्वोत्तम सदुपयोग करने का उपदेश दिया। माँ सरस्वती की पूजा एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा तथा सद्गुरुदेव सब पर कृपा-वृष्टि करें!

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की १९५० में अखिल भारत यात्रा के दौरान अहमदाबाद में आगमन के उपलक्ष्य में आयोजित 'अमृत पर्व' मनाने के लिए दिव्य जीवन संघ, अहमदाबाद शाखा द्वारा किये जा रहे 'अमृत-पर्व शिविर' के सानुरोध आमन्त्रण के उत्तर में दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज नवम्बर के प्रथम सप्ताह में अहमदाबाद गये।

दिव्य जीवन संघ, अहमदाबाद शाखा ने ४ से ६ नवम्बर २०११ तक, इस शुभ अवसर पर एक आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित किया था। परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने इस सम्मेलन में भाग लेते हुए तीनों दिन सम्मेलन में आशीर्वचन दिये। मुख्यालय आश्रम से उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज तथा भावनगर शाखा से परम पूज्य श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज भी सम्मेलन में भाग लेने के लिए पधारे थे। सभी सन्तों ने भाग लेते हुए आशीर्वचन दिये।

इस आध्यात्मिक सम्मेलन को आयोजित करने हेतु जो खुला मैदान एवं भवन श्री स्वामिनारायण संस्थान, अहमदाबाद द्वारा उपलब्ध करवाया गया, उसके लिए दिव्य जीवन संघ मुख्यालय धन्यवाद सहित सराहना करता है।

अहमदाबाद के आवास-काल के दौरान श्री स्वामी जी महाराज अन्य स्वामीजीओं सहित पूज्य महात्मा गान्धी जी का 'साबरमती आश्रम' देखने गये तथा वहाँ संक्षिप्त सत्संग भी किया।

श्री स्वामी जी महाराज स्वामिनारायण आश्रम, गान्धीनगर भी गये तथा वहाँ 'सत्-चित्-आनन्द वाटर शो' भी देखा जिसमें अमरत्व का शाश्वत सन्देश देती हुई नचिकेता की कथा को लेज़र विद्युत्, अग्नि, ध्वनि, एनिमेशन, वीडिओ प्रोजेक्शन तथा जीवन्त चरित्रों के विलक्षण संयोजन के द्वारा अत्यन्त भव्य एवं सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया था।

श्री स्वामी जी महाराज ७ नवम्बर २०११ को वापिस मुख्यालय पधारे।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज दिव्य जीवन संघ, अहमदाबाद शाखा द्वारा 'अमृत पर्व' नाम से आयोजित त्रिदिवसीय राज्य स्तरीय 'साधना शिविर' में भाग लेने के लिए अहमदाबाद, गुजरात गये। परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज १९५० में की गयी अखिल भारत और सिलोन यात्रा के दौरान १ और २ नवम्बर १९५० को अहमदाबाद गये थे। अहमदाबाद शाखा ने सद्गुरुदेव के पावन आगमन की स्मृति में हीरक जयन्ती मनाने के लिए ४ से ६ नवम्बर तक राज्य स्तरीय साधना शिविर आयोजित किया था। श्री स्वामी जी ने उसमें भाग लेते हुए प्रातः ब्राह्ममुहूर्त के प्रार्थना-सत्र में प्रतिदिन साधना सम्बन्धी निर्देश, अपने

प्रवचनों में दिये। पूर्वाह्न तथा अपराह्न सत्रों में भी स्वामी जी महाराज ने प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए प्रवचन दिये। गुजरात प्रान्त में दिव्य जीवन संघ से सम्बन्धित शाखा-प्रतिनिधियों की 'आयोजन-सभा' में भी स्वामी जी महाराज ने भाग लिया।

दिव्य जीवन संघ, अहमदाबाद शाखा के पदाधिकारियों एवं भक्तों ने समस्त कार्यक्रम अत्यन्त विधिवत् आयोजित किया था। यह पूर्णतया विघ्नबाधारहित तथा मनोरंजक एवं सरस था। यह प्रतिनिधियों के लिए सुखद एवं सुविधाजनक था। यह भागीदारों के लिए अत्यधिक लाभप्रद रहा। गुजरात के भक्तों में उत्साह लाने वाला, उन्हें प्रेरणा-दायक तथा गुजरात प्रान्त की दिव्य जीवन संघ की गतिविधियों में प्रोत्साहन लाने वाला सिद्ध हुआ। साधना शिविर के प्रबन्धकों, विशेष रूप से प्रो. नरेन्द्र पी. शुक्ला जी, जिनके प्रोत्साहन से एवं पूर्ण प्रयत्नों से शिविर हुआह्नह्नको अत्यन्त धन्यवाद है।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज के साथ स्वामी जी ३ नवम्बर को स्वामिनारायण संस्था का दर्शनीय स्थान अक्षरधाम देखने गान्धीनगर गये तथा ५ नवम्बर को महात्मा गान्धी के साबरमती आश्रम गये। साबरमती आश्रम में साधना शिविर के प्रतिनिधियों के साथ संक्षिप्त सत्संग भी हुआ। दोनों ही स्थानों का दर्शन अत्यन्त लाभप्रद एवं प्रेरणाप्रद रहा।

राजस्थान में, दिव्य जीवन संघ बीकानेर शाखा ने स्वामी जी महाराज को वहाँ के शिव मन्दिर में लक्ष्मी-नारायण भगवान् तथा सूर्य भगवान् की मूर्ति स्थापना अनुष्ठान के लिए आमन्त्रित किया था। स्वामी जी महाराज ७ नवम्बर को बीकानेर गये तथा इस पावन समारोह में सम्मिलित हुए। हवन एवं पूजा के उपरान्त अत्यन्त विधिवत् मूर्ति स्थापना की गयी। नारायण भगवान् तथा भगवती माँ के विग्रह डा. आर. पी. गुप्ता जी एवं श्रीमती मीरा गुप्ता जी, तथा सूर्य भगवान् का विग्रह श्री कमल खतूरिया एवं श्रीमती रेणु खतूरिया जी द्वारा समर्पित थे। इन सभी को हमारा हार्दिक धन्यवाद।

इस शुभ अवसर पर बीकानेर शाखा द्वारा शाखा के प्रार्थनालय में ७ से ११ नवम्बर तक नित्य ही अपराह्न में सत्संग आयोजित किया गया था। स्वामी जी ने नित्य ही इस सत्संग में भाग लेते हुए प्रवचन दिये। इसमें ७ और ११ नवम्बर को लालेश्वर महादेव मन्दिर, शिवबाड़ी, बीकानेर के अध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी संवित सोमगिरि जी महाराज भी सम्मिलित हुए तथा दोनों दिन आशीर्वचन भी दिये। इस्कॉन मन्दिर, बीकानेर के साधु श्री अनन्त दास जी महाराज ने ८ नवम्बर को आशीर्वचन दिये।

शाखा द्वारा स्थानीय तुलसी कुटीर (गोस्वामी तुलसीदास सत्संग कुटीर) में वहाँ के भक्तों के लिए दिनांक १० नवम्बर को एक सत्संग आयोजित किया गया था। तुलसी कुटीर पूरे वर्ष पर्यन्त प्रतिदिन विभिन्न सन्तों को आमन्त्रित करके सत्संग आयोजित करने के कार्य द्वारा स्थानीय भक्तों की आध्यात्मिक उन्नति हेतु बड़ी भारी सेवा कर रही है। स्वामी जी महाराज ने तुलसी कुटीर में भक्तियोग पर अत्यन्त प्रबोधक प्रवचन दिया जो अत्यन्त ध्यानपूर्वक श्रवण कर रहे भक्त समुदाय के लिए अत्यधिक प्रेरणाप्रद एवं लाभप्रद रहा।

राजस्थान प्रान्त का प्रमुख दैनिक पत्र, 'राजस्थान पत्रिका' की 'पत्रिका कोनेक्ट कमेटी' द्वारा 'राजकीय डूँगर कॉलेज' में ८ नवम्बर को 'भारतीय परम्परा और समाज' विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया गया था। 'पत्रिका'ह्नह्नयह देखते हुए कि युवा वर्ग एवं विद्यार्थियों में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का हनन होता जा रहा है जिससे कि न केवल उनकी निजी बल्कि भारतीय समाज की भी बड़ी भारी हानि हो रही हैह्नह्नइन युवाओं एवं विद्यार्थियों में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को पुनः विकसित करने में अत्यधिक रुचि ले रही है तथा इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय-समय पर विभिन्न शिक्षा-संस्थानों में ऐसे सेमिनार आयोजित करती रही है। यह प्रस्तुत सेमिनार भी उसी शृंखला के अन्तर्गत था। कॉलेज के प्रिंसिपल, प्राध्यापक वर्ग तथा विद्यार्थियों ने सेमिनार में भाग लिया। सेमिनार के प्रवक्ता श्रद्धेय श्री स्वामी संवित सोमगिरि जी महाराज तथा पण्डित श्री

जानकी नारायण श्रीमाली जी थे। उनके आमन्त्रण पर श्री स्वामी जी महाराज भी सेमिनार में सम्मिलित हुए तथा प्रवचन भी दिया।

स्वामी जी महाराज परम पूज्य महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विशोकानन्द जी महाराज के आमन्त्रण पर ७ नवम्बर को उनके आश्रम गये तथा परम पूज्य श्री स्वामी संवित सोमगिरि जी महाराज के निमन्त्रण पर शिवमठ आश्रम (श्री लालेश्वर मन्दिर) भी गये।

श्री स्वामी जी महाराज की बीकानेर यात्रा द्वारा शाखा की गतिविधियों में पुनर्जीवन संचार हुआ तथा यह सभी के लिए अत्यधिक प्रेरणाप्रद रहा।

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ, अहमदाबाद के प्रेमपूर्ण अनुरोध के उत्तर में दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ४ नवम्बर २०११ कोह्नह्नसद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अहमदाबाद यात्रा के उपलक्ष्य में मनाये जा रहे 'अमृत पर्व' में सम्मिलित होने तथा ५ और ६ नवम्बर को होने वाले 'अमृत पर्व शिविर' में भाग लेने के लिएह्नह्नगये।

७ नवम्बर की प्रातः श्री स्वामी जी महाराज ने सत्संग द्वारा दिव्य जीवन संघ वडोदरा शाखा के भक्तों को आशीर्वादित किया। सायंकाल को श्री स्वामी जी महाराज ने 'स्वामी शिवानन्द स्टडी सैंटर ऑफ दी स्पिरिचुअल एण्ड कल्चरल हैरिटेज ऑफ इण्डिया' (भारत की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर का स्वामी शिवानन्द अध्ययन केन्द्र) के तत्त्वावधान में 'फैकल्टी ऑफ आर्ट्स, एम. एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा' तथा दिव्य जीवन संघ वडोदरा शाखा के संयुक्त आयोजित सेमिनार में भाग लिया। सेमिनार का मूल विषय 'जीवन-मूल्यों में वृद्धि एवं विकास द्वारा भ्रष्टाचार उन्मूलन' रखा गया था। श्री स्वामी जी महाराज ने तथा श्री जी. नारायणन (चेयरमैन एमरिटस ऑफ एक्सेल इन्डस्ट्रीज़ लि.) दोनों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से इस विषय पर अपने विचार प्रकट किये। चेयर पर्सन प्रो. योगेश सिंह (वायस चांसलर, एम. एस. यूनिवर्सिटी) ने विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए सेमिनार का निष्कर्ष प्रस्तुत किया। सेमिनार में प्राध्यापक वर्ग, विद्यार्थी, इन्डस्ट्री के सदस्य तथा दिव्य जीवन संघ शाखा के भक्त, सभी ने भाग लिया था।

श्री स्वामी जी महाराज ८ नवम्बर २०११ को मुख्यालय आश्रम लौट आये।

ईश्वर-प्राप्ति की कामना

ईश्वर-प्राप्ति की कामना अन्य सभी कामनाओं को नष्ट करने की आकांक्षा है। यह वह कामना नहीं है जिसे सामान्य भाषा में कामना कहते हैं। माचिस की एक ही तीली जैसे घास के बहुत बड़े ढेर को जला कर भस्म कर डालती है, उसी भाँति ईश्वर की सर्वव्यापकता, अन्तर्व्यापकता तथा सर्वशक्तिमत्ता सम्बन्धी एक ही विचार सभी लौकिक इच्छाओं को जला देने के लिए पर्याप्त है; क्योंकि ईश्वर हमारी आकांक्षाओं की पूर्ति है और जब हम उसकी विद्यमानता का अनुभव करने लगते हैं, तब हममें अन्य कोई इच्छा शेष नहीं रह जाती। क्षण-भर के लिए ईश्वर का सच्चा, अकृत्रिम गहन ध्यान अश्वमेध-यज्ञ, अग्निष्टोम, राजसूय-यज्ञ आदि अनेक अनुष्ठानों के समान है। यह सर्वोच्च यज्ञ एवं परम सत्य है।

स्वामी कृष्णानन्द

पावन-स्मृति में

श्रद्धेय श्री स्वामी षण्मुखानन्द जी महाराज

अत्यन्त शोकपूर्ण हृदय से हम सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के वरिष्ठतम शिष्यों में से एक, श्रद्धेय श्री स्वामी षण्मुखानन्द जी महाराज के ५ नवम्बर दोपहर १.४० बजे परम पिता परमात्मा को प्राप्त हो जाने का दुःखद समाचार दे रहे हैं। एक सप्ताह पूर्व वे बीमार हुए थे और उन्हें ऋषिकेश नगर के निर्मल आश्रम अस्पताल ले जाया गया था, जहाँ उन्हें 'आई. सी. यू.' में भरती किया गया। यद्यपि स्वास्थ्य में कुछ सुधार दिखायी देने लगा था, किन्तु यह वास्तव में उतना सुधार नहीं था जितना अपेक्षित था, और तब तक अन्त आ गया।

२.३० बजे दोपहर तक उनका पार्थिव शरीर आश्रम लाया गया और शीघ्र ही अन्तिम यात्रा की तैयारी आरम्भ हो गयी। आश्रम की परम्परानुसार उनका शरीर पुष्पालंकृत करके आश्रम में शोभा-यात्रा के रूप में विश्वनाथ मन्दिर, श्री गुरुदेव के समाधि मन्दिर और भजन हाल से होते हुए अन्ततः माँ गंगा के तट पर स्थित आश्रम-घाट पर ले जाया गया। आश्रम के सभी वरिष्ठ स्वामी तथा अन्तेवासी और भक्त वहाँ एकत्रित हुए तथा वेदमन्त्रोच्चारण सहित सम्पन्न किये जाने वाले अन्तिम पारम्परिक दुग्ध-गंगाजल के अभिषेक-स्नान में सभी ने भाग लिया। उसके बाद देह को चन्दन, विभूति, कुंकुम तथा फूलमाला इत्यादि से अलंकृत करने के उपरान्त आरती करके अन्ततः माँ गंगा के अर्पण कर दिया।

श्री स्वामी जी का पूर्वाश्रम नाम वेंकटरमण था। उनका जन्म तमिलनाडु के तंजौर ज़िले के एक रूढ़िवादी ब्राह्मण परिवार में ९ अक्तूबर १९२६ को हुआ। उन्होंने अपने माता-पिता से भक्ति एवं धार्मिक नित्य-नियमों के प्रति दृढ़ निष्ठा विरासत में प्राप्त की थी, जिसने उनमें ईश्वर के प्रति गहन प्रेम एवं स्वभाव में सादगी उत्पन्न कर दी थी। उन्होंने हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के बाद बिजली के सामान की दुकान आरम्भ की, जो कि उनके जातिगत धन्धे से विलक्षण ही थी। किन्तु इसी के माध्यम से भगवान् का कार्य कैसे सम्पन्न हुआ, यह आश्चर्य-जनक है, क्योंकि इसके द्वारा उन्हें उस समय गुरुदेव के संयोगवश दर्शनों का लाभ प्राप्त हो गया, जब अक्तूबर १९५० में गुरुदेव की अखिल भारत यात्रा के समय

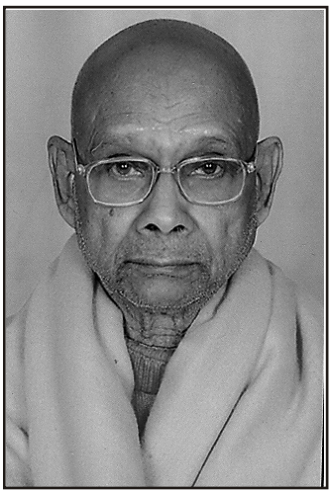

गुरुदेव के धर्मपुरा आधिनाम नगर में आगमन के अवसर पर उन्हें इस कार्यक्रम में 'लाउडस्पीकर' इत्यादि लगाने का कार्य मिला। किन्तु गुरुदेव के संयोगवश प्राप्त हुए इतने से दर्शन मात्र ने उनके युवा हृदय पर चमत्कारिक प्रभाव डाला। इसके उपरान्त धीरे-धीरे उनकी अपने इस धन्धे से रुचि हटती गयी, जिसके परिणाम स्वरूप वे अन्ततः शिवानन्द आश्रम आ पहुँचे। वहाँ वे आश्रम के 'मेडिकल आफ़िसर' डा. के. सी. राय से मिले, जिन्होंने इनका गुरुदेव से एक नेक एवं एकनिष्ठ व्यक्ति के रूप में परिचय कराते हुए इनके बिजली के धन्धे के सम्बन्ध में भी बताया। गुरुदेव ने तुरन्त कहाह्न ''यहीं ठहरें और आश्रम की सेवा करें।'' २१ फरवरी १९५१ से ये आश्रम में ही रह रहे थे। दो वर्ष के बाद जब आश्रम को विद्युत् की स्वीकृति मिली, तो यद्यपि छोटे पैमाने पर ही सही, किन्तु ये ही थे जिन्होंने सारे आश्रम में बिजली की तारें बिछाने इत्यादि का सारा काम करके आश्रम में प्रकाश ला कर गुरुदेव से प्रचुर मात्रा में प्रशंसा प्राप्त की।

इन्हें १९५७ में संन्यास प्राप्त हुआ। श्री स्वामी जी ने अतिथिशाला एवं विद्युत् विभाग में प्रारम्भिक समय में

बहुमूल्य सेवा दी तथा बाद में लगभग तीन दशकों तक निरन्तर 'निर्माण विभाग' में सेवा देते रहे।

स्वामी जी यद्यपि अद्वैत वेदान्त के अनुयायी थे, तथापि पूजा की अनुष्ठानिक विधि की प्रभावोत्पादकता में दृढ़ विश्वास रखते थे तथा स्कन्द भगवान् की इसी प्रकार की पूजा में नित्य ही घण्टों तक व्यस्त रहते थे, जिनके कि वे एकनिष्ठ भक्त थे। अनुष्ठानिक विधि से पूजा-पद्धति को वे भली-भाँति जानते थे तथा वे मन्त्रों और पूजा-विधान मेंह्वह्वऔर विशेष रूप से स्कन्द भगवान् की पूजा में पूर्णतया निपुण थे। पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी उन्होंने आश्रम के भजन हाल में होने वाली स्कन्द भगवान् की छह दिवसीय पूजा के लिए स्वयं को तैयार किया हुआ था। उन्होंने प्रथम दिवस की पूजा सम्पन्न की; किन्तु द्वितीय दिवस यह दुःखद घटना घट गयी, जिससे 'लकवे' के कारण उन्हें अधरंग हो गया।

अन्तिम दो दशकों के दौरान वे आश्रम के सभी उत्सवों के अवसर पर पूजा में प्रमुख पुजारी के पद पर आसीन रहे। उन्होंने शीशमझाड़ी, ऋषिकेश में एक छोटा-सा मन्दिर श्री शिरडी साईं बाबा का भी बनवाया था, जहाँ वे प्रतिदिन जाते थे और वहाँ पूजा भी सम्पन्न करते थे।

वर्ष २००१ में वे जौहनसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका के 'आदि शंकर आश्रम' के आमन्त्रण पर दक्षिण अफ्रीका उस समय गये जब कि उसके संस्थापक श्री स्वामी शंकरानन्द जी, जो कि सद्गुरुदेव से दीक्षित थे, की प्रथम पुण्य-तिथि थी।

श्री स्वामी षण्मुखानन्द जी महाराज अत्यन्त सरल, सादे एवं निरभिमानी थे, उनमें किसी भी प्रकार का अहंभाव नहीं था। आश्रम में वे सभी के अत्यन्त प्रिय थे, सबके अपने थे तथा सबको स्वयं पहले बुला लेते थे, जो कि एक बहुत बड़ा गुण है।

हम दिवंगत आत्मा की शाश्वत शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पावन स्मृति में

श्रद्धेय श्री स्वामी तेजोमयानन्द जी महाराज

अत्यन्त शोक सहित हम अपने परम पूज्य गुरुदेव के अत्यन्त वरिष्ठ शिष्य श्री स्वामी तेजोमयानन्द जी महाराज के ११ नवम्बर २०११ को, अपने दीर्घकालीन मित्र एवं गुरुभाई श्रद्धेय श्री स्वामी षण्मुखानन्द जी महाराज के एक सप्ताह के बीच ही हुए, देहावसान की सूचना दे रहे हैं। काफी समय से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था और ११ की प्रातः वे शान्तिपूर्वक निद्रावस्था में अपने ही कक्ष में महाप्रयाण कर गये।

आश्रम की परम्परानुसार उनकी अन्तिम यात्रा उनकी पुष्पों से सुसज्जित देह को लिये हुए गुरुदेव के समाधि मन्दिर, विश्वनाथ मन्दिर एवं भजन हाल की परिक्रमा करते हुए अन्ततः गंगा माँ के तट पर स्थित आश्रम के विश्वनाथ घाट पर पहुँची। वहाँ वैदिक मन्त्रोच्चारण सहित दूध एवं गंगाजल से स्नान करवाया गया, जिसमें आश्रम के सभी स्वामी जी, पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में आश्रम-अन्तेवासी सम्मिलित हुए। तत्पश्चात् **'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय'** के सामूहिक गान सहित नौका द्वारा ले जा कर देह को गंगा माँ के अर्पण कर दिया गया।

उनका जन्म ११ अप्रैल १९२९ को तमिलनाडु राज्य के कुम्भकोणम् तालुका के मेलावाडयैल ग्राम में हुआ था। उनका पूर्वाश्रम नाम राजगोपालन था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा कोलकाता और मुम्बई में हुई। उनके पिता मुम्बई में 'श्रीनिवास कॉटन मिल्स' में कार्यरत थे, किन्तु ३७ वर्ष की अल्पायु में ही उनका देहान्त हो गया। अतः इनको उसी मिल में नौकरी मिल गयी। वहाँ थोड़े ही समय काम करने के बाद ये दिल्ली गये और वहाँ भी थोड़े समय के लिए 'इण्डियन ऑक्सीजन कम्पनी' में काम किया। वहाँ से ये घूमने के लिए ऋषिकेश आये और यहाँ गुरुदेव के दर्शन प्राप्त हुए जिससे सदा के लिए यहीं रह गये।

उन्होंने १९४९ में आश्रम में प्रवेश किया और एक वर्ष के भीतर ही सम्भवतया १९५० में इन्हें संन्यास मिल गया। उनको वापिस बुलाने के उनके परिवार वालों ने बहुत प्रयत्न किये, किन्तु सब व्यर्थ गये। किन्तु १९७३ में वे दक्षिण भारत की यात्रा पर गये और वहाँ चेन्नै के श्री वेणुगोपाल स्वामी जी के दर्शन किये, जिन्होंने उनको अपनी माँ के पास जाने और उसकी सेवा करने का निर्देश दिया। तब इन्होंने माँ के अन्तिम समय अर्थात् १९९१ तक सेवा की।

उन्होंने विस्तृत रूप से भारत-भ्रमण किया था तथा अनेकों पवित्र स्थलों, तीर्थों और तिब्बत में कैलास मानसरोवर तक की यात्रा की हुई थी तथा बहुत से अपने समय के महान् सन्तों के भी दर्शन किये थे।

जब वे आश्रम में थे तो आश्रम के लगभग सभी विभागोंह्नह्नयथा कार्यालय, प्रेस, पत्र-व्यवहार विभाग इत्यादिह्नह्नमें सेवा-कार्य करते रहे। वे अत्यन्त परिश्रमी एवं सेवा-परायण थे। श्री गुरुदेव का आशीर्वाद इन पर प्रचुर मात्रा में था।

उनकी आत्मा की शाश्वत परम शान्ति एवं सद्गुरुदेव के कमलचरणों में निरन्तर निवास प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पुण्य स्मृति में

श्री रामसिंह जी

हम श्री रामसिंह, जो कि आश्रम का अत्यन्त दीर्घकाल से अन्तेवासी था, के २२ नवम्बर २०११ की प्रातः अत्यन्त शान्तिपूर्वक हुए निधन का दुःखद समाचार दे रहे हैं। यह उस समय हुआ जब कि वह अपना नाश्ता लिये हुए अपने कक्ष की ओर जा रहा था। इससे पूर्व उसे किसी प्रकार के स्वास्थ्य खराब होने की कोई समस्या नहीं थी। अचानक हृदयगति रुक जाने से अन्त हो गया। आश्रम के सभी वरिष्ठ स्वामी जी ने उसकी देह पर माल्यापर्ण किया तथा उसके उपरान्त गंगातट पर स्थित श्मशान स्थल पर ले जाया गया, प्रेस के उसके सभी साथी, आश्रम के अन्तेवासी तथा सभी कर्मचारी और उसके गाँवह्नह्नपलेल गाँव, पौड़ी गढ़वाल के बहुत से लोग भी साथ थे।

रामसिंह का आश्रम में इस प्रकार रहना, मानो वह कहीं से भी न आया हो, उसकी कहानी को रहस्यमय-सा रूप देता है। सम्भवतया १९५५-५६ में वह १०-११ वर्ष की आयु के लड़के के रूप में आया होगा। यद्यपि प्रारम्भ में उसकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय तथा रसोईघर में लिया जाता रहा, तथापि उसे सद्गुरुदेव के एक वरिष्ठ शिष्य श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी महाराज के साथ-साथ रहते भी देखा जाता था।

वह उन सब सामान्य लड़कों जैसा नहीं था, जैसे बहुधा हमें देखने में आते हैं। आरम्भिक किशोरावस्था में ही वह विद्युत् से सम्बन्धित वस्तुओं में अत्यधिक रुचि लेता दिखायी देता था यद्यपि उसको इस विषय में कोई विधिवत् प्रशिक्षण नहीं मिला था, फिर भी उस ओर की उसकी अद्भुत कुशलता एवं प्रौढ़ता देख कर सभी अचंभित रह जाते। एक बार उसने

बहुत सी छुट-पुट अनोखी वस्तुएँ एकत्रित कीं और एक कामचलाऊ बिजली की घण्टी बनायी तथा उसे श्री गुरुदेव के सामने बजा कर भी दिखाया, जिससे वे अत्यन्त प्रसन्न हुए। एक दूसरी बार उसने एक अपरिष्कृत-सी बन्दूक बनायी, और वह चली भी। कई बार वह धातु के टुकड़ों से तलवारें भी बनाया करता तथा उन्हें भजन हाल के सामने की छोटी दीवार पर घिस कर तीखी धार बनाता।

एक बार उसने प्रिंटिंग प्रेस के पीछे के जंगल में एक पेड़ के तने में रहने के लिए लकड़ी का घर भी बनाया था। इन सब बातों से लगता है कि वह विलक्षण व्यक्ति था। वह मूलतः एक अच्छा एवं भला व्यक्ति था तथा वह मन, वाणी और कर्म से किसी को कभी भी चोट नहीं पहुँचाता था। परिस्थितियों द्वारा जब कभी वह स्वयं को कोने में धकेल दिया गया अनुभव करता, तो अपना क्षोभ तक व्यक्त न करके स्वयं को ही कष्ट में डालने वाले स्वभाव का था।

१९६३ में उसे प्रिंटिंग प्रेस में 'लाइनोटाइप मशीन' एक ऐसी मशीन, ८० के दशक में कम्प्यूटर पद्धति आने से पहले गर्मधातु पद्धति द्वारा प्रत्येक पंक्ति के एक-एक अक्षर को बनाने का कार्य करती थीह्नह्नके लिए सीसा पिघला कर उबालने का कार्य करने का, पक्का काम रामसिंह को मिल गया इसके साथ-साथ उसने प्रिंटिंग प्रेस की सफाई का काम करते हुए उसे साफ-सुथरा रखने का कार्य भी सँभाल रखा था जिसे कि वह अन्तिम दिन तक करता रहा। इसके अतिरिक्त वह अकेला ही हर माह हिन्दी एवं अँगरेजी की पत्रिकाओं को प्रेस से नीचे मैगजीन विभाग में पहुँचाया करता था। विद्युत् प्रणाली में प्रयुक्त होने वाली समस्त पारिभाषिक शब्दावली से वह भलीभाँति परिचित तो था ही, उसे स्वयं प्रयोग में भी लाता था।

अन्ततः वह बहुत वर्षों तक हमारे परमाध्यक्ष श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज की निजी सेवा में भी प्रेस के काम के साथ-साथ ही रहा। इसी प्रकार की सेवा में और भी कई लोगों के पास रहा।

परम पिता परमात्मा उसे अपना सान्निध्य प्रदान करें! सद्गुरुदेव के आशीर्वाद दिवंगत आत्मा पर भरपूर हों! शाश्वत परम शान्ति उसे प्राप्त हो, यही प्रार्थना है! हरि ॐ तत् सत्!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पावन स्मृति में

अत्यन्त शोक सहित हम **कु. सावित्री मल्होत्रा** के २६ अक्तूबर २०११ को हुए निधन की सूचना दे रहे हैं।

कु. सावित्री मल्होत्रा, जो अपने परिचितों में 'बुआजी' कह कर जानी जाती थीं, १९५७ से शिवानन्द आश्रम आ रही थीं तथा उन्हें अनेकों बार सद्गुरुदेव के दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य मिला था। वे परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज से दीक्षित थीं तथा शिरडी के साईं बाबा की भक्त थीं।

यद्यपि उनका संसार में एक भी सगा-सम्बन्धी नहीं था, तथापि अपने प्रेमपूर्ण तथा अपनत्व-भरे स्वभाव से उन्होंने बहुतों को अपना बनाया हुआ था। गत अनेक वर्षों से उन्हें कैंसर रोग तथा अन्य कई शारीरिक व्याधियाँ थीं; किन्तु सभी कष्टों के प्रति उनमें अथाह सहन-शक्ति थी। वे अत्यन्त निर्भीक तथा उदार-हृदया थीं। २५ अक्तूबर २०११ की अर्ध रात्रि में १२.३० बजे बाद उन्होंने अन्तिम श्वास लिया।

उनकी आत्मा की परम शान्ति, सद्गति तथा परमात्मा और सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पावन चरणों में निवास प्राप्त होने की प्रार्थना करते हैं!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

भगवान् के सम्मुख अपने को पवित्रता, आस्था, भक्ति तथा सम्पूर्ण आत्म-समर्पण की भावनाओं सहित उद्घाटित कर दें। तब आपके ऊपर भागवती कृपा का अवतरण होगा। **स्वामी चिदानन्द**

सूचना

३४ वाँ ओडिशा दिव्य जीवन संघ आध्यात्मिक सम्मेलन एवं युवा शिविर

परम श्रद्धेय गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार अनुकम्पा से ३४ वें ओडिशा दिव्य जीवन संघ आध्यात्मिक सम्मेलन तथा ७ वें युवा शिविर का आयोजन २९ दिसम्बर २०११ से १ जनवरी २०१२ तक भंज भवन, सेक्टर-५, राउरकेला, जिला सुन्दरगढ़, ओडिशा में किया जायेगा।

सम्मेलन में दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के अनेक सन्त तथा अन्य आश्रमों से पधारे प्रबुद्ध जन आशीर्वचन प्रदान करेंगे। संघ की समस्त शाखाओं के भक्त आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा विश्व-शान्ति की ओर अग्रसर करने वाले इस कार्यक्रम में प्रतिभागिता के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

१. प्रतिनिधि शुल्कह्लह्ल₹३५०/- प्रति व्यक्ति (भोजन तथा ठहरने की व्यवस्था सहित; व्यवस्था केवल २५०० प्रतिभागियों के लिए सीमित)

२. युवा शिविर रजिस्ट्रेशन शुल्कह्लह्ल₹५१/- (केवल ५०० युवाओं के लिए सीमित)

३. युवा शिविर की आयु-सीमाह्लह्ल१४ से २१ वर्ष (पहचान-पत्र लाना आवश्यक है)

४. आवेदन-पत्र पहुँचने की अन्तिम तिथिह्लह्ल३० नवम्बर २०११

समस्त धनराशि बैंक ड्राफ्ट अथवा चेक के द्वारा **"The Divine Life Society, Rourkela Branch"** के नाम से भेजें। ड्राफ्ट अथवा चेक का देय State Bank of India, Rourkela Evening Branch (Code No. 2112) में होना चाहिए।

पंजीकरण तथा अन्य सूचना के लिए सम्पर्क करें :

१. रबीन्द्र कुमार पंडब, प्रमुख आयोजक, मोबाइल नं. ०९९३७३९८९९६

२. नृसिंह चरण दास, सचिव, मोबाइल नं. ०९४३७२४४७७७, शिवानन्द आश्रम, M/4, फ़ेज़ह्लI, छेंद, राउरकेलाह्ल७६९०१५, जिला : सुन्दरगढ़, ओडिशा

३. जयचन्द्र नायक, मोबाइल नं. ०९४३८८४९०४९

४. बिप्र चरण पात्र, मोबाइल नं. ०९४३७०७८०४१

मैत्री का अभिप्राय

सत्ता के विभिन्न स्तरों से मैत्री-भाव रखना ही सम्पूर्ण योग है। मित्रता वस्तुओं की वर्तमान योजना के साथ अपने को सुमेलित करने की एक पद्धति है। जितना अधिक हममें मैत्री-भाव होगा, उतना ही अधिक हममें सुमेल होगा और उतनी ही अधिक हममें गुण-ग्रहण का बोध तथा वस्तुओं के साथ एकत्व की भावना होगा। मैत्री सृष्टि के साथ संयुक्तता की दिशा में चेतना द्वारा विकसित एक मनोवृत्ति है। मैत्री का अभिप्राय सत् के साथ अभिन्नता है।

स्वामी कृष्णानन्द

सूचना

अखिल आन्ध्र द डिवाइन लाइफ सोसायटी का ३८ वाँ आध्यात्मिक सम्मेलन

परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से अखिल आन्ध्र द डिवाइन लाइफ सोसायटी का ३८ वाँ आध्यात्मिक सम्मेलन १८ से २० जनवरी २०१२ तक गोदावरी नदी के तट पर स्थित सुप्रसिद्ध 'मन्दिर नगर' (टैम्पल टाउन) भद्राचलम् में होगा। सम्मेलन के लिए निर्धारित स्थानह्लश्री स्वामी वारी कल्याण मण्डपम्, श्री रामचन्द्र स्वामी देवस्थानम्, भद्राचलम्, आन्ध्र प्रदेश है।

इस सम्मेलन में मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ सन्त तथा अन्य स्थानीय संस्थाओं से विद्वज्जन पधारेंगे। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार के उद्देश्य से किये जा रहे इस सम्मेलन में द डिवाइन लाइफ सोसायटी की सभी शाखाओं के भक्त सदस्य सादर आमन्त्रित हैं।

सम्मेलन में सम्मिलित होने का प्रतिनिधि-शुल्क ₹११६/- (भोजन एवं आवासीय सुविधा सहित) रखा गया है, जिसे कृपया डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा मनिआर्डर द्वारा 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी, ए/सी., सरपका (Sarapaka)' पर देय तथा 'कोषाध्यक्ष, डी एल एस कान्फ्रेंस, भद्राद्री, शिवानन्द आश्रम, आर. टी. सी. कॉम्प्लैक्स के पीछे, भद्राचलमह्लह्ल५०७१११, आन्ध्र प्रदेश' पर भेजें।

सम्पर्क सूत्र

१. श्री स्वामी प्रकाशानन्द, प्रेज़िडेंट, स्टेट कमेटी, मो. नं. ०९७०१२६९१९९

२. श्री जी. नागेश्वर राव, सचिव, मो. नं. ०९८४८७४९३३९

३. श्री च. सुब्रमनियन्, कोषाध्यक्ष, मो. नं. ०९८४९१७२२१८

४. श्री जी. सत्यनारायण, सह सचिव, मो. नं. ०९९४९८७९२०६

५. श्री पी. वेंकट राजु, सह कोषाध्यक्ष, मो. नं. ०९२९३७१७४६३

६. श्री के. वीर स्वामी, कोआर्डिनेटर (समन्वयक), मो. नं. ०९९४९१९०८२७

सभी भक्तों से निवेदन है कि इस सम्मेलन में भाग ले कर इसे सफल बनायें।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

आध्यात्मिक पथ पर उन्नति की गति धीमी होती है। महीने-दो-महीने में उन्नति करने की आशा नहीं रखनी चाहिए। इसके लिए आपको वर्षों तक संघर्ष करना होगाह्लह्लतब कहीं आप थोड़ी उन्नति कर सकेंगे। अतः अपने समस्त कर्म पूजा-भाव से करें। मन ईश्वर को सौंप दें तथा अपने हाथ कर्मों को। आप कहीं भी जायें, आप कुछ भी करेंह्लह्लसमस्त स्थानों और सबमें ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करें। यह आपके दैनिक आध्यात्मिक जीवन का अंग बन जाना चाहिए।

स्वामी चिदानन्द

सूचना

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल साधना शिविर

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल का वार्षिक साधना शिविर २१ से २५ जनवरी २०१२ तक श्री काशी विश्वनाथ समिति कॉम्प्लैक्स, हामिरागाच्छी, रेलवे स्टेशनह्वह्वमालिया, पश्चिम बंगाल में होगा।

पंजीकरण राशिह्वह्वपश्चिम बंगाल के प्रतिनिधियों के लिए ₹३००/- प्रति व्यक्ति तथा अन्य राज्यों से आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए ₹१००/- होगी।

नामांकन की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर २०११ है तथा नामांकन के लिए फार्म **श्री विजय स्वाँई, ४ सी, मेहेर अली मंडल स्ट्रीट, मोमिनपुर, कोलकाता ७०० ०२७, पश्चिम बंगाल** को भेजने होंगे।

नामांकन तथा अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क-सूत्र :

डा. पी. के. सामन्तरे, मो. नं. ०९००२०८०५१४; श्री सी. बी. सहगल, मो. नं. ०९८३०१४४१४७; श्री नितुल पारिख, मो. नं. ०९८३००४०७३०; श्री प्रफुल्ल महापात्र, मो. नं. ०९४३८३०३६२४ और श्री विजय स्वाँई, मो. नं. ०९३३९३९२८४५

सभी भक्तों से अनुरोध है कि शिविर में भाग लें। ***द डिवाइन लाइफ सोसायटी***

सूचना

नारायणपुर, ओडिशा में दिव्य जीवन संघ सम्मेलन

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से दिव्य जीवन संघ नारायणपुर शाखा अपनी रजत जयन्ती के शुभ-अवसर पर गोपालपुर ऑन-सी, जिलाह्वह्वगंजम (ओडिशा) में ६ जनवरी २०१२ से ८ जनवरी २०१२ तक त्रिदिवसीय आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित कर रही है। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के वरिष्ठ सन्त एवं साधक भक्तों को आशीर्वादित करेंगे।

प्रतिनिधि शुल्क ₹३००/- प्रति व्यक्ति

समस्त धनराधि बैंक ड्राफ्ट अथवा चैक द्वारा **डिवाइन लाइफ सोसायटी नारायणपुर ब्रांच, गोपालपुर ऑन-सी, जिला गंजम (ओडिशा), पिन : ७६१००२** के नाम पर **बैंक ऑफ़ बड़ौदा, गोपालपुर ऑन-सी** पर देय को भेजें।

अधिक जानकारी के लिएह्वह्वसम्पर्क सूत्र :

(१) श्री महेन्द्र पटनायक : ०९८६१३९३४६७, ०९८६१०७८६०५; (२) श्री जुरननाथ पाणीग्राही : ०८७६३१८८३५६; (३) श्री के. श्रीधर दास : ०९८६१०५७५२४

सभी भक्तों से सादर अनुरोध है कि सम्मेलन में पधार कर इसे सफल बनायें। ***द डिवाइन लाइफ सोसायटी***

भारतीय विद्या भवन की निबन्ध प्रतियोगिताएँ २०११

पाठकों को सूचित किया जाता है कि भारतीय विद्या भवन अन्य प्रतियोगिताओं के साथ-साथ **श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज** की स्मृति में एक वार्षिक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है। इसका विवरण इस प्रकार है :

भवन की श्री स्वामी शिवानन्द स्मृति निबन्ध प्रतियोगिता २०११

विषयह्वह्व**वर्तमान शिक्षा प्रणाली और मानवीय उत्कर्ष**

आयु-सीमाह्वह्व२० से ३० वर्ष ; पुरस्कारह्वह्व ₹१०००/-, ₹७००/-, ₹३००/-

माध्यमह्वह्व**हिन्दी**

आवेदन-पत्र की अन्तिम तिथिह्वह्व**३१ जनवरी २०१२**

आवश्यक शर्तें

१. सीमा : २००० शब्द। निबन्ध की टाइप की हुई अथवा टाइपसैट की हुई दो प्रतियाँ।

२. भाग लेने वाले प्रतियोगी का पूरा नाम, घर का पता, आयु का प्रमाण-पत्र, फोटो (छोटी), दूरभाष नं./फैक्स नं./ई-मेल पता।

३. प्रतियोगियों से प्रार्थना है कि अपना बैंक खाता नम्बर का विवरण भेजें, क्योंकि विजेताओं को धनराशि चैक के द्वारा भेजी जायेगी।

४. पुरस्कार-विजेता आगामी तीन वर्षों तक इस प्रतियोगिता में पुनः भाग नहीं ले सकता।

५. निर्णायकों का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा।

पत्र-व्यवहार के लिए पताह्वह्वप्रो. एस. ए. उपाध्याय, प्रोजेक्ट अधिकारी, भवन की निबन्ध प्रतियोगिताएँ, भारतीय विद्या भवन, कुलपति मुंशी मार्ग, चौपाटी, मुम्बईह्वह्व४०० ००७

E-mail: bhavan@bhavans.info web-site: http://www.bhavans.info

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी, डी एल एस (मुख्यालय) का यात्रा कार्यक्रम

१ से ५ फरवरी २०१२ तक	टाटानगर (झारखण्ड)	युवा सम्मेलन एवं साधना शिविर
७ से १७ फरवरी २०१२ तक	मलाड (मुम्बई)	योग शिविर एवं एक-दिवसीय साधना शिविर
२२ से २५ फरवरी २०१२ तक	लखनऊ (उ. प्र.)	सत्संग
२६ से २८ फरवरी २०१२ तक	कानपुर (उ. प्र.)	सत्संग और विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रम

सम्पर्क-सूत्र नं. ९०२७०४२१२०, ९४१२१४०३००

महत्तवपूर्ण सूचना ७०वा कोर्स की

द डिवाइन लाइफ सोसायटी की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

आगरा (उत्तर प्रदेश): सितम्बर और अक्तूबर २०११ की माहावधि में शाखा ने साप्ताहिक रविवार को सत्संग, हवन आदि प्रति मंगलवार को तथा दैनिक योगासन-वर्ग परिचालित करने के उपरान्त (१) शिवानन्द जयन्ती, आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ, (२) एक सन्त श्री की मुलाकात पर विशेष सत्संग किये।

अहिवारा (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा दैनिक सान्ध्य-सत्संग, प्रति एकादशी को सामूहिक जप तथा दीपावली को विशेष पूजा सम्पन्न हुए।

अम्बाला (हरियाणा): जप सहित दैनिक सान्ध्य-सत्संग, दिनांक ११ सितम्बर को वीडियो सत्संग, प्रति मंगलवार को श्री हनुमान् जी के स्तोत्रों का पाठ और दैनिक होम्योपैथी-सेवा के अतिरिक्त विशेष गतिविधियों में, (१) शिवानन्द जयन्ती को श्री कृष्णलीला के नाटक सहित विशेष सत्संग। (२) चिदानन्द जयन्ती को २ घण्टों का महामृत्युंजय जप। (३) दिनांक १३ सितम्बर को आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी के प्रवचन सहित सत्संग आदि सम्पन्न हुए।

बड़कुँआल (ओडिशा): *दैनिक गतिविधियाँ*ह्न दैनिक २ घण्टों पर्यन्त पूजा के पश्चात् स्तोत्र-पाठ, सान्ध्य-सत्संग, साप्ताहिक सत्संग प्रति गुरुवार को और प्रति रविवार को पादुका-पूजा। *विशेष गतिविधियाँ*ह्न(१) शिवानन्द जयन्ती और (२) चिदानन्द जयन्ती को ब्राह्ममुहूर्त से ले कर रात्रि पर्यन्त सहस्र नामावली के साथ पादुका-पूजा, गीता-पारायण, एक-एक घण्टे का अखण्ड कीर्तन तथा सत्संग।

बढ़ियाउस्ता (ओडिशा): *विशेष गतिविधियाँ*ह्न (१) श्रीकृष्ण जयन्ती : दिनभर २० घण्टों पर्यन्त विविध आध्यात्मिक कार्यक्रम ब्राह्ममुहूर्त से ले कर ३०० भक्तों की प्रतिभागिता में, समापन में *श्रीमद् भागवतम्* में से पठन। (२) भागवत सप्ताह : माह अगस्त के दिनांक २१ से दिनांक २७ पर्यन्त प्रभात में पारायण और सायंकाल में प्रवचन। (३) परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की पुण्य-तिथि : ब्राह्ममुहूर्त में साधना से ले कर पादुका-पूजा सहित भजन-कीर्तन, नारायण-सेवा, ब्राह्मण-भोजन, निर्धन मरीजों को औषधियों का वितरण, ३०० प्रतिभागियों द्वारा प्रसाद-सेवन। (४) शिवानन्द जयन्ती : ब्राह्ममुहूर्त से ले कर रात्रि पर्यन्त विविध आध्यात्मिक कार्यक्रम। (५) चिदानन्द जयन्ती : समान रूप से विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमह्न २०० प्रतिभागियों द्वारा प्रसाद-सेवन।

बंगलूरू (कर्नाटक): *नियमित गतिविधियाँ*ह्न साप्ताहिक प्रति गुरुवार को सत्संग, प्रति शुक्रवार को स्तोत्र-पाठ, रविवारीय सत्संग : प्रथम, तृतीय और चतुर्थ रविवार को विविध आध्यात्मिक कार्यक्रम। *विशेष गतिविधियाँ*ह्न(१) शिवानन्द जयन्ती : चार दिनों के कार्यक्रमों में भजन और वीडियो सत्संग, विशेष भक्ति-संगीत और सन्तों द्वारा प्रवचन।

बरबिल् (ओडिशा): प्रति सोमवार को आश्रम में और प्रति गुरुवार को चल-सत्संग, प्रति रविवार को बाल-सत्संग, मासिक साधना-दिवस, चिदानन्द-दिवस को विविध आध्यात्मिक कार्यक्रम, शिवानन्द होमियोपैथिक औषधालय द्वारा सेवा में माह अगस्त में ५७५ मरीजों के इलाज आदि *दैनिक गतिविधियों* के उपरान्त शाखा ने (१)

श्रीकृष्ण जयन्ती को दिनभर कार्यक्रम तथा रात्रि-पूजा, (२) परम पूज्य चिदानन्द जी महाराज की पुण्य-तिथि को दिनभर आध्यात्मिक कार्यक्रम आदि विशेष गतिविधियाँ सम्पन्न हुई।

बरगढ़ (ओडिशा): *दैनिक गतिविधियाँ*ह्नह्नदैनिक द्विवार पादुका-पूजा, आरती, प्रार्थना, दैनिक योगासन-वर्ग, दैनिक सान्ध्य-स्वाध्याय, साप्ताहिक सत्संग, साप्ताहिक पादुका-पूजा, भगवद् गीता का क्रमिक पाठ, प्रति रविवार स्वाध्याय। *विशेष गतिविधियाँ*ह्नह्न(१) परम पूज्य बाबा चैतन्य चरणदास जी महाराज और उनके साथियों द्वारा *भागवत-कथा* और सितम्बर माह के दिनांक ५ से दिनांक १३ पर्यन्त पारायण। (२) शिवानन्द जयन्ती : परम पूज्य बाबा जी का प्रवचन। (३) चिदानन्द जयन्ती : विशेष साधना-दिवस के रूप में २५० प्रतिभागियों द्वारा दिनभर के विविध और महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक कार्यक्रम, जिनमें परम पूज्य बाबा जी का प्रवचन भी था।

बेलारी (कर्नाटक): दैनिक पूजा और प्रति रविवार को पादुका-पूजा सहित सत्संग के आधिक्य में, (१) *शिवानन्द जयन्ती* और (२) *चिदानन्द जयन्ती* को अनेक आध्यात्मिक कार्यक्रम। (३) *विजयादशमी* : विशेष पूजा और पादुका-पूजा। (४) *प्रतिष्ठा महोत्सव का वार्षिक दिवस* : विशेष पूजा, अभिषेक, अर्चना और पादुका-पूजा। (५) *दीपावली* : विशेष पूजा, पादुका-पूजा।

भवानीपत्तनम् (ओडिशा): साप्ताहिक द्विवार सत्संग और मासिक साधना दिवस के अतिरिक्त शाखा ने दिनांक ११ सितम्बर को आदरणीय श्री भक्तचरण दास जी एम. पी. द्वारा रखी गयी, श्री स्वामी शिवानन्द बाल विकास केन्द्र की स्थापना की, नींव की पूर्व की सन्ध्या को पादुका-पूजा, 'शिवानन्द मन्त्र' सहित लक्षार्चना की और दिनांक १० सितम्बर को होम द्वारा समापन किया। शिवानन्द जयन्ती और चिदानन्द जयन्ती को पादुका-पूजा तथा छात्रों को खाद्य-पैकेट वितरित हुए।

भिलाई (छत्तीसगढ़): *नियमित गतिविधियाँ*ह्नह्न दिनांक २१ अगस्त, १८ सितम्बर और ९ अक्तूबर को मासिक सत्संग, मातृसत्संग और श्री हनुमान जी के स्तोत्र-पाठ प्रति मंगलवार को, प्रति शुक्रवार स्तोत्र-पाठ और गीता-पाठ एकादशी की उभय तिथियों को। *विशेष गतिविधियाँ*ह्नह्न(१) परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की पुण्य-तिथि को पादुका-पूजा और 'उपदेशामृत' में से पठन। (२) शिवानन्द जयन्ती और चिदानन्द जयन्ती को पादुका-पूजा, प्रवचन, अन्न-भोग।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश) : दैनिक सत्संग में श्री विष्णु सहस्रनाम-पारायण के आधिक्य में शाखा द्वारा परम पूज्य गुरुमहाराज की पुण्य-तिथि को और चिदानन्द जयन्ती को पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, विशेष सत्संग किये गये।

भुवनेश्वर (ओडिशा): *नियमित गतिविधियाँ*ह्नह्न दैनिक प्रभातीय पादुका-पूजा, साप्ताहिक सत्संग के आधिक्य में, (१) दिनांक १ सितम्बर से ५ सितम्बर पर्यन्त, ५ दिवसीय ध्यान-शिविर; (२) दिनांक ८ सितम्बर से २४ सितम्बर पर्यन्त १७ दिवसीय आध्यात्मिक महोत्सव; (३) शिवानन्द जयन्ती को ब्राह्ममुहूर्तीय, आदरणीय श्री स्वामी अर्पणानन्द जी के प्रवचन सहित प्रभातीय और दिनभर के अति महत्त्वपूर्ण और लाभदायक आध्यात्मिक कार्यक्रम तथा गुरुदेव विषयक सायंकालीन प्रवचन, साधु-सेवा, नारायण-सेवा और प्रसाद-सेवन; (४) दिनांक ९ सितम्बर से दिनांक २३ सितम्बर पर्यन्त १५ दिवसीय कार्यक्रमों में, ब्राह्ममुहूर्त से ले कर दिनभर आध्यात्मिक कार्यक्रम, दिनांक ११ सितम्बर को रक्तदान शिविर; (५) चिदानन्द जयन्ती को समान आध्यात्मिक कार्यक्रम और प्रभातीय प्रवचन, अपराह्न में विविध कार्यक्रम; (६) महिला शाखा ने इसके पूर्व

निबन्ध-लेखन, गीता-पाठ, विश्व-प्रार्थना का पाठ और वक्तृत्व की प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं, जिनके पुरस्कारों का वितरण परम पूज्य श्री गजपति दिव्य सिंह देव जी महाराज के द्वारा किया गया। उन्होंने सान्ध्य-सभा में प्रवचन भी दिया। अपराह्न सभा में राजकीय अस्पताल में भर्ती हुए मरीजों को फल, ब्रेड, बिस्कुट और रुपये १२००० का ज्ञान-प्रसाद वितरित किये गये। सितम्बर माह में ओडिशा के भयंकर और विशाल बाढ़-ग्रस्त विस्तारों में आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन, और रुपये एक लाख पर्यन्त के खाद्य-पैकेट, कोरा राशन, बिस्कुट, वस्त्र और मोमबत्तियाँ वितरित हुईं।

बिलासपुर (छत्तीसगढ़): शाखा ने मासिक द्विवार शिवानन्द दिवस और चिदानन्द दिवस को, मासिक बाल-सत्संग, सितम्बर माह में शिवानन्द जयन्ती और चिदानन्द जयन्ती को साधना-दिवस तथा भागवत जयन्ती को विशेष सत्संग पूर्ण किये।

ब्रह्मपुर (ओडिशा): *नियमित गतिविधियों* के उपरान्त शाखा ने (१) श्री गुरु पूर्णिमा और आराधना दिवस को ब्राह्ममुहूर्त से ले कर रात्रिपर्यन्त स्वाध्याय सहित सत्संग तथा अस्पताल में भर्ती मरीजों को अन्नदान; (२) सितम्बर माह के दिनांक १६ से दिनांक २३ पर्यन्त साधना-सप्ताह; (३) श्रीकृष्ण जयन्ती को मध्यरात्रि की आरती पर्यन्त विविध कार्यक्रम; (४) परम पूज्य गुरुमहाराज की पुण्य-तिथि को प्रभात से ले कर रात्रि के ११.०० पर्यन्त विविध कार्यक्रमों के साथ १०० निर्धन जनों को भोजन, ४०० भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन; (५) सितम्बर माह में श्री गणेश चतुर्थी; (६) शिवानन्द जयन्ती और आराधना-दिवस; (७) चिदानन्द जयन्ती को ब्राह्ममुहूर्त से ले कर दिनभर के कार्यक्रम; (८) आदरणीय श्री शरतचन्द्र देव जी की जन्म-शताब्दी के अनुसन्धान में प्रति माह दिनांक २७ को विशेष सत्संग।

ब्रह्मपुर, लांजीपल्ली (ओडिशा): शाखा ने शिवानन्द जयन्ती तथा चिदानन्द जयन्ती को पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, स्तोत्र-पाठ, नारायण-सेवा आदि परिचालित किये।

छत्रपुर (ओडिशा): दैनिक गतिविधियों के आधिक्य में शाखा ने (१) श्री गणेश चतुर्थी, (२) शिवानन्द जयन्ती, (३) चिदानन्द जयन्ती, (४) विशेष चल-सत्संगों में प्रवचन आदि विशेष गतिविधियाँ पूर्ण की।

चेन्नै, वाशरमेनपेट (तमिल नाडु): शाखा ने शिवानन्द जयन्ती की विशेष गतिविधि में विशेष जाहिर उत्सव किया, जिसमें पादुका-पूजा, गीता-पाठ नाम-संकीर्तनम्, प्रसाद आदि सम्पन्न हुए।

दिगपहंडी (ओडिशा): अनेक आध्यात्मिक नियमित गतिविधियों के आधिक्य में, विशेष गतिविधियों में शाखा ने (१) श्री गणेश चतुर्थी, (२) शिवानन्द जयन्ती, (३) चिदानन्द जयन्ती, (४) सितम्बर माह के दिनांक ९ से दिनांक २३ पर्यन्त विशेष दैनिक सत्संग आदि अनेक आध्यात्मिक कार्यक्रम पूर्ण किये।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): विशेष गतिविधियाँ, जो नियमित गतिविधियों के उपरान्त सम्पन्न हुईंह्वह्व(१) शिवानन्द जयन्ती, (२) श्री राधा अष्टमी, (३) दीपावली का पर्व।

गान्धीनगर (गुजरात): नियमित गतिविधियों के आधिक्य में शाखा ने (१) विशेष प्रवचन, दिनांक ६ अगस्त को आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी द्वारा, (२) श्री कृष्ण जयन्ती को विशेष सत्संग, (३) परम पूज्य गुरुमहाराज की पुण्य-तिथि, (४) शिवानन्द जयन्ती, (५) चिदानन्द जयन्ती आदि विशेष गतिविधियाँ पूर्ण कीं।

गुडुर (आन्ध्र प्रदेश): (१) शाखा के अध्यक्ष श्री द्वारा शिवानन्द जयन्ती को गुरुदेव के जीवन तथा उपदेश पर एक स्कूल में प्रवचन तथा मिठाइयों का वितरण। (२) एक ग्राम में

विशेष उत्सव में उनके द्वारा श्री चिदानन्द जी महाराज के जीवन तथा उपदेश पर प्रवचन। (३) चिदानन्द जयन्तीमें २००० से अधिक लोगों की उपस्थिति।

गुरदासपुर (पंजाब): परम पूज्य गुरुमहाराज की पुण्य-तिथि को एक ग्राम में निःशुल्क नेत्र-यज्ञ किया गयाह्ह१२५ मरीजों के परीक्षण और जरूरतमन्दों को निःशुल्क लेन्स-दान।

हरिद्वार (उत्तराखण्ड): शाखा द्वारा शिवानन्द जयन्ती और चिदानन्द जयन्ती को पादुका-पूजा, कुष्ठरोगियों की एक संस्था में अन्नदान और औषधियों का वितरण और सायंकाल को सत्संग सम्पन्न हुए।

हैंगँग (मणिपुर): शाखा ने श्री महानवमी को आदरणीय श्री स्वामी गोपालानन्द जी की अध्यक्षता में प्रभात में ८ से ले कर अपराह्न में एक पर्यन्त विशेष राज्य-सत्संग सम्पन्न किया जिसमें राज्य भर के २५० भक्तों की प्रतिभागिता में विविध आध्यात्मिक कार्यक्रम तथा प्रसाद-सेवन पूर्ण हुए।

जयपुर (राजस्थान): *नियमित गतिविधियाँह्ह*(१) देवी भागवत कथा, एकादशी के सत्संग, पूर्णिमा को श्री सत्यनारायणदेव की पूजा, दैनिक सान्ध्य-सत्संग, साप्ताहिक सत्संग प्रति शनिवार, रविवार, साप्ताहिक मातृ-सत्संग, शिवानन्द होमियोपैथिक औषधालय द्वारा सेवा, निर्धनों को, कुष्ठरोगियों की संस्था को, छात्रों को तथा निराधार विधवा स्त्रियों को अन्नदान-मिठाइयों का वितरण, कोरा राशन का दान, छात्रवृत्तियाँ और आर्थिक सहाय तथा शिवानन्द लाइब्रेरी द्वारा सेवा। *विशेष गतिविधियाँह्ह*(१) श्री राधा अष्टमी, (२) शिवानन्द जयन्ती, (३) दिनांक २० से २६ सितम्बर को श्रीमद् भागवत कथा, (४) चिदानन्द जयन्ती, (५) नवरात्रि पूजा, (६) दिनांक १३ अक्तूबर को आदरणीय श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी द्वारा हीरक महोत्सव हाल की नींव रखने का समारम्भ और एक महामण्डलेश्वर जी, दो एम. एल. ए. महाशय और अनेक सुप्रतिष्ठित व्यक्तियों की उसमें उपस्थिति, (७) गोवर्धन पूजा और ५६ खाद्य पदार्थों का भोग। (८) दीपावली पर्व।

जाजपुर (ओडिशा): नियमित साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त, *विशेष गतिविधियों में* (१) दिनांक २७ अगस्त को, परम पूज्य गुरुमहाराज की पुण्य-तिथि को ब्राह्ममुहूर्त से ले कर रात्रि पर्यन्त विविध आध्यात्मिक कार्यक्रम। (२) दिनांक २४ सितम्बर को चिदानन्द जयन्ती को बाढ़ग्रस्त लोगों के लिए राहत-शिविर बना कर कोरा राशन, वस्त्र, कम्बल और मोमबत्तियों का दान दिया।

काकिनाडा, माधवपत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश): विविध विस्तारों में प्रति रविवार, मंगलवार और शुक्रवार को सत्संग पूर्ण करने के आधिक्य में शाखा ने दिनांक ६, ७ और १४ अक्तूबर को भी सत्संग आयोजित किये। शाखा द्वारा १०० प्रतिभागियों की उपस्थिति में शिवानन्द जयन्ती और ८५ भक्तों की उपस्थिति में चिदानन्द जयन्ती मनायी।

कानपुर (उत्तर प्रदेश): शाखा ने दैनिक द्विवार पूजा, प्रति एकादशी को भजन-कीर्तन सहित, दिनांक ६ सितम्बर को श्री हनुमान चालीसा के १०८ आवर्तन और ब्राह्मण-भोजन आदि एवं शिवानन्द जयन्ती भी मनायी।

कंटाबांजी (ओडिशा): शाखा का प्रति रविवार, साप्ताहिक सत्संग, श्रीमद् भगवद्गीता के स्वाध्याय सहित होता है।

खातिगुडा (ओडिशा): *नियमित गतिविधियों* के आधिक्य में शाखा द्वारा (१) नवरात्रि-पूजा : विशेष पूजा-अर्चना, स्तोत्र-पाठ, स्वाध्याय, विशेष सान्ध्य-सत्संग प्रथम दिन को विशेष भण्डारा, विजया-दशमी सत्संग; (२) शिवानन्द जयन्ती और (३) चिदानन्द जयन्ती को ब्राह्ममुहूर्त के कार्यक्रम से ले कर विशेष रात्रि-सत्संग। चिदानन्द जयन्ती

के विशेष में मध्याह्न भोजन में भण्डारा और नारायण-सेवा आदि *विशेष गतिविधियाँ* सम्पन्न हुईं।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति एकादशी को मातृ-संकीर्तन के आधिक्य में शाखा ने (१) शिवानन्द जयन्ती और (२) चिदानन्द जयन्ती को विशेष कार्यक्रम; (३) प्रभात तथा सन्ध्या को क्रमशः पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए योगासन वर्ग; (४) प्रति रविवार को ध्यान योग; (५) स्वामी देवानन्द होमियोपैथिक औषधालय द्वारा सेवा।

महासमुन्द (छत्तीसगढ़): *नियमित गतिविधियाँ*ह्न सितम्बर माह में रामायण-पाठ और रामचरित मानस पाठ, ध्यान, साप्ताहिक गीता-पाठ और श्री हनुमान् जी के स्तोत्र-पाठ। *विशेष गतिविधियाँ*ह्न(१) शिवानन्द जयन्ती को अखण्ड कीर्तन, प्रवचन आदरणीय श्री स्वामी विद्यानन्द जी द्वारा, आरती और प्रसाद। इस उत्सव का स्थानिक अखबार ने सुन्दर अहवाल दिया।

नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश): नियमित गतिविधियों के आधिक्य में शाखा ने (१) परम पूज्य गुरुमहाराज की पुण्य-तिथि को सान्ध्य-सत्संग में परम पूज्य गुरुमहाराज के जीवन चरित्र में से पठन, अस्पताल में भर्ती मरीजों को, कुष्ठ रोगियों को और टी. बी. मरीजों को फल तथा बिस्कुटों का वितरण। इसके पूर्व श्री हरिशयनी एकादशी को और गुरु पूर्णिमा को विशेष सत्संग और उपरोक्त समान फल वितरण किया गया।

नाभा (पंजाब): शाखा ने दिनांक ९ अक्तूबर को एक 'Positive Living' पर परिषद् आयोजित की जिसमें ब्राह्ममुहूर्त से ले कर विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमह्न योगासन, प्राणायाम, प्रभात और सन्ध्या को आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी अखिलानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी और अन्य द्वारा प्रवचन और प्रसाद-सेवन।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): नियमित गतिविधियों के अतिरिक्त शाखा द्वारा विशेष गतिविधियाँ निम्नानुसार सम्पन्न हुईं:ह्न(१) श्री गणेश महोत्सव। (२) शिवानन्द जयन्तीह्न४ दिवसीय कार्यक्रमों में दिनांक ४ सितम्बर को 'मानस परिसंवाद' जिसमें छह रामायण-मण्डलियों में से १० विद्वानों ने भाग लिया। भिन्न-भिन्न ग्रामों में सितम्बर के दिनांक ५, ६, ७ को नगर-संकीर्तन किया गया। ८ सितम्बर को पादुका-पूजा में आदरणीय श्री स्वामी विद्यानन्द जी, श्रीमती शोभा जी नाहटा, अहिवारा नगर पंचायत प्रमुख और पण्डित श्री राजन महाराज और अनेक महानुभाव उपस्थित थे। भर्ती हुए मरीजों को फल-वितरण और ६०० भक्तों को मध्याह्न भोजन दिया गया। (३) चिदानन्द जयन्ती को हवन हुआ। (४) नवरात्रि पूजा। (५) भिलाई शाखा में प्रथम तीन रविवार को विशेष सत्संग का आयोजन।

नयागढ़ (ओडिशा): नियमित गतिविधियाँ सुचारु रूप से सम्पन्न करके, शाखा ने (१) उत्साहपूर्ण और सक्रिय श्रीकृष्ण जयन्ती उत्सव, (२) परम पूज्य गुरुमहाराज की पुण्य-तिथि को, (३) शिवानन्द जयन्ती को, (४) चिदानन्द जयन्ती को शाखा ने विविध लाभदायक आध्यात्मिक कार्यक्रम सम्पन्न किये।

परलाखेमुंडी (ओडिशा): शाखा ने द्विवार दैनिक पूजा, साप्ताहिक सत्संग, श्री सुन्दरकाण्ड पारायण के अतिरिक्त, (१) शिवानन्द जयन्ती, (२) चिदानन्द जयन्ती, (३) पुण्य-तिथि को और आराधना-दिवस को साधना-दिन विशेष सत्संग, पादुका-पूजा, नारायण-सेवा सम्पन्न की।

पसुल्लंडा (ओडिशा): नियमित गतिविधियों के आधिक्य में शाखा द्वारा (१) शिवानन्द जयन्ती और (२) चिदानन्द जयन्ती को प्रभात से ले कर मध्याह्न के

भोजन-प्रसाद पर्यन्त विविध कार्यक्रम एवं (३) २०० माध्यमिक शाला के छात्रों के लिए आध्यात्मिक प्रश्नोत्तर आयोजित करके गुरुदेव की पुस्तकें पुरस्कार में दीं। (४) समीपवर्ती एक ग्राम में ७० हरिजनों, जो बाढ़ग्रस्त थे, को अन्नदान किया।

पटियाला (पंजाब): शाखा ने नगर के विविध विस्तारों में चल-सत्संग आयोजित किये। (१) शिवानन्द जयन्ती और (२) को चिदानन्द जयन्ती को कुष्ठरोगियों की एक संस्था में मिठाइयों का वितरण, (३) आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी की सितम्बर १८-१९ की मुलाकात पर ध्यान, पादुका-पूजा और सत्संग, विद्वानों के प्रवचन आयोजित किये।

रायचूर (कर्नाटक): शाखा जप सहित दैनिक सत्संग परिचालित करती है।

रायगढ़ (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा विशेष जाहिर सत्संग शिवानन्द जयन्ती और चिदानन्द जयन्ती को, प्रवचन सहित आयोजित किये, जिनमें महानुभावों के साथ, विशाल जनसंख्या उपस्थित थी।

रायरंगपुर (ओडिशा): शाखा ने साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द दिवस और चिदानन्द दिवस को पादुका-पूजा के साथ (१) श्री कृष्ण जयन्ती, (२) शिवानन्द जयन्ती और (३)चिदानन्द जयन्ती को पादुका-पूजा, विशेष सत्संग, चिदानन्द जयन्ती को सत्संग-आयोजन के पश्चात् अनाथालय के बालकों को वस्त्रों, अध्ययन-साहित्य और मिठाइयाँ बाँटी।

रायपुर (छत्तीसगढ़): नियमित गतिविधियों के साथ-साथ शाखा ने, (१) शिवानन्द जयन्ती और (२) चिदानन्द जयन्ती को ध्यान, पादुका-पूजा, संकीर्तन, सत्संग और कुष्ठ रोगियों की एक संस्था में फल-वितरण किया।

राजकोट (गुजरात): शाखा विविध आध्यात्मिक गतिविधियाँ नियमित सुचारु रूप से पूर्ण करती है। श्री गुरुपूर्णिमा को और शिवानन्द जयन्ती और चिदानन्द जयन्ती को एक दिवसीय साधना-दिन, विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रम, माह अगस्त से भगवद्गीता अध्ययन-वर्ग, सत्संग केन्द्र में सत्संग, श्रावण माह के यथायोग्य स्तोत्र-पाठ सहित दैनिक सत्संग भी शाखा ने पूर्ण किये। सामाजिक सेवा में शाखा (१) होम्योपैथिक औषधालय, (२) नेत्र-यज्ञह्वह्वकुल मिला कर ९, (३) दन्त-यज्ञह्वह्व३ ग्रामों में, (४) निःशुल्क दन्त-चिकित्सालय शिवानन्द-भवन में, (५) आर्थिक सहाय हृदयरोगियों को और डायलिसीस सुविधा, (६) मेडिकल कैम्पह्वह्व२, शिवानन्द-भवन में, (७) अन्य सहायह्वह्व विकलांगों को और विधवा स्त्रियों कोह्वह्वइत्यादि शाखा की प्रशंसनीय और लाभदायक गतिविधियाँ हैं।

रझोल (आन्ध्र प्रदेश): शाखा ने चिदानन्द जयन्ती मनाने के लिए विशेष उत्सव किया, जिसमें वेद-पाठ, भजन-संकीर्तन-स्तोत्र-पाठ और प्रवचन आदि आयोजित किये।

राउरकेला, स्टील टाउनशिप (ओडिशा): साप्ताहिक चल-सत्संगों के अतिरिक्त विशेष गतिविधियों में शाखा ने (१) श्री कृष्ण जयन्ती, (२) दूसरे दिन, नन्द महोत्सव, (३) चिदानन्द पुण्यतिथि को और (४) शिवानन्द जयन्ती को विविध, विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रम, (५) ज्ञानयज्ञह्वह्वदिनांक १७ सितम्बर से २२ सितम्बर पर्यन्त दैनिक प्रवचन और (६) चिदानन्द जयन्ती को अनेक आध्यात्मिक कार्यक्रम आदि सम्पन्न किये।

सालेपुर (ओडिशा): शाखा द्वारा दैनिक, साप्ताहिक, नियमित गतिविधियाँ उत्तम रूप से सम्पन्न होती हैं जिनमें भक्त-गण उत्साह से भाग लेते हैं। *विशेष गतिविधियाँ*ह्वह्व(१) शिवानन्द दिवस, (२) माह अगस्त-सितम्बर में १५३ छात्रों

को योगासन प्रशिक्षण और (३) १६३ मरीजों के उपचार, (४) श्रीकृष्ण जयन्ती, (५) चिदानन्द पुण्य-तिथि, (६) दिनांक १ सितम्बर, शाखा का स्थापना-दिन, (७) शिवानन्द जयन्ती, (८) भागवत जयन्ती और (९) चिदानन्द जयन्ती को विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

साउथ बलण्डा (ओडिशा): नियमित गतिविधियों के आधिक्य में शाखा ने *विशेष गतिविधियाँ* (१) सितम्बर के दिनांक ८ से दिनांक २३ पर्यन्त साधना-पक्ष (१५ दिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रम), (२) चिदानन्द जयन्ती को विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रम आदि भी पूर्ण किये।

सुनाबेडा (ओडिशा): नियमित साप्ताहिक द्विवार सत्संगों के अतिरिक्त, विशेष गतिविधियों में, शाखा ने (१) श्री गणेश चतुर्थी उत्सव, (२) शिवानन्द जयन्ती, (३) भागवत जयन्ती और (४) चिदानन्द जयन्ती आदि विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रमों सहित, सुचारु रूप से आयोजन करके, उनकी पूर्णता की।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा का सत्संग द्वितीय रविवार को, चल-सत्संग तृतीय रविवार को होता है। शिवानन्द जयन्ती और चिदानन्द जयन्ती को विशेष सत्संग, स्वाध्याय, जप, आरती, प्रसाद आदि थे।

विशाखपत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा दैनिक सत्संग, साप्ताहिक सत्संग प्रति सोमवार को और उसके बाद चिकित्सिकीय परीक्षण आदि सम्पन्न करती है। शिवानन्द जयन्ती और चिदानन्द जयन्ती को पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, पूज्य गुरुदेव और पूज्य गुरुमहाराज के जीवन पर और उनके उपदेश पर प्रवचन सुआयोजित हुए। ५० से अधिक भक्तों की उपस्थिति में नवरात्रि का उत्सव पारम्परिक और उत्साहपूर्ण रीति से मनाया गया।

विदेशी शाखा

बुस्सुम (नेधरलन्डस्): शाखा की गतिविधियाँ निम्नानुसार हैं।सदस्यों के लिए दैनिक योगासन-वर्ग, जिसमें २०० प्रतिभागी होते हैं। छात्रों के लिए योगासन (१८ प्रतिभागी), बालकों के लिए योगासन-वर्ग, सगर्भा महिलाओं के लिए योगासन-वर्ग, भगवद्गीता और पंतजलि का योगशास्त्र विषयक अभ्यासक्रम, होमियोपैथिक औषधालय, प्राकृतिक पद्धति से स्वास्थ्य-उपचार और मसाज आदि।

भक्ति से ज्ञान की प्राप्ति

प्रेम ही ईश्वर को प्राप्त करता है।

जहाँ प्रेम है, वहीं ईश्वर है।

ग्राहकता ही श्रद्धा में प्रस्फुटित होती है तथा श्रद्धा ही भक्ति एवं ज्ञान में विकसित होती है।

भक्ति से नम्रता आती है।

भक्ति के विकास के साथ वैराग्य भी बढ़ता है।

भक्ति दो के साथ प्रारम्भ होती है; परन्तु एक में परिसमाप्त होती है। दो प्रेम के द्वारा एक हो जाते हैं। वहीं लक्ष्य की प्राप्ति होती है, जहाँ एक है दो नहीं।

स्वामी शिवानन्द

समस्त स्थानों और सबमें ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करें

आध्यात्मिक पथ पर उन्नति की गति धीमी होती है। महीने-दो-महीने में उन्नति करने की आशा नहीं रखनी चाहिए। इसके लिए आपको वर्षों तक संघर्ष करना होगाह्लह्लतब कहीं आप थोड़ी उन्नति कर सकेंगे। अतः अपने समस्त कर्म पूजा-भाव से करें। मन ईश्वर को सौंप दें तथा अपने हाथ कर्मों को। आप कहीं भी जायें, आप कुछ भी करेंह्लह्लसमस्त स्थानों और सबमें ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करें। यह आपके दैनिक आध्यात्मिक जीवन का अंग बन जाना चाहिए। **स्वामी चिदानन्द**

भक्ति से ज्ञान मिलता है

१. प्रेम ही ईश्वर को प्राप्त करता है।

२. जहाँ प्रेम है, वहीं ईश्वर है।

३. ग्राहकता ही श्रद्धा में प्रस्फुटित होती है तथा श्रद्धा ही भक्ति एवं ज्ञान में विकसित होती है।

४. भक्ति ने नम्रता आती है।

५. भक्ति के विकास के साथ वैराग्य भी बढ़ता है।

६. भक्ति दो के साथ प्रारम्भ होती है; परन्तु एक में परिसमाप्त होती है। दो प्रेम के द्वारा एक हो जाते हैं। वहीं लक्ष्य की प्राप्ति होती है, जहाँ एक है दो नहीं।

७. प्रेम ज्ञान-नेत्र को खोलता है।

८. प्रेम जीवात्मा को ईश्वर से मिला देता है।

९. अपनी आत्मा के रूप में ईश्वर की उपासना कीजिए। यही परा भक्ति है। यही वेदान्तिक भक्ति है। यही अभेद उपासना है।

१०. ज्ञान तथा वैराग्यह्लह्लये भक्ति के दो पुत्र हैं।

११. तेल के बिना प्रदीप बुझ जायेगा। भक्ति के बिना ज्ञान तथा वैराग्य नष्ट हो जायेंगे।

१२. भक्ति के बिना ज्ञान सूख जायेगा तथा वैराग्य वाष्प हो कर उड़ जायेगा।

१३. भक्ति से मानव-जाति के प्रति प्रेम बढ़ता है।

१४. भक्ति ईश्वर के प्रति प्रेम है तथा इसके द्वारा यह मनुष्य के प्रति भी प्रेम है।

१५. किसी प्रकार की भी कामना भक्ति के साथ नहीं रह सकतीं।

१६. ईश्वर-भक्ति के विकसित होने पर सारी कामनाएँ नष्ट हो जाती हैं।

१७. प्रेम का मार्ग सूक्ष्म है। यहाँ कुछ भी माँगना नहीं है। यहाँ मनुष्य अपनी आत्मा को ईश्वर में खो देता है। दो अब एक बन जाते हैं।

१८. भक्ति अपने पैरों पर ही स्थित है; उसे अन्य आधार की आवश्यकता नहीं है।

१९. भक्ति अनुपम है। यह आनन्द का मूल है। सन्त अथवा गुरु-कृपा से ही इसको प्राप्त किया जा सकता है।

२०. ईश्वर-कृपा से ही परम भक्ति की प्राप्ति सम्भव है।

२१. ईश्वरीय पूर्णता की प्राप्ति के लिए भक्ति ही एकमात्र कुंजी है।

मूर्तिमान साधुत्व

श्रीमती हैब्रा हर्रमान, स्विटज़र लैण्ड

भगवान् की कृपा तथा गुरु के माध्यम से उनके किये जाने वाले कार्यों को एक सच्चे एवं निष्ठावान् शिष्य के लिए अभिव्यक्ति कर सकना अत्यन्त कठिन होगा।

आप सन्तरे के रस अथवा अन्नास की सुगन्धि का आनन्द तो भलीभाँति ले सकते हैं, किन्तु क्या जिसने कभी इनको चखा न हो, उसको इसके बार में समझा सकते हैं? अतः आवश्यकता के इस समय मेंह्वह्व गुरुदेव को, अपने विश्व-भर में व्याप्त शिष्यों के प्रति देने वाले सतत प्रेम और निर्देशन, को बताने का अधूरा प्रयास करने की अपेक्षा, मैं आज उनके 'जन्म-दिवस-मेज़' पर एक अन्य ऐसा उपहार प्रस्तुत करना अधिक अच्छा समझती हूँ जो स्वयं को सीधे गुरुदेव के हृदय में निःसृति भव्य प्रभामण्डल में परिणित कर लें। क्योंकि, जैसा कि यीशु ने भी कहा है,''वस्तुतः इससे बढ़ कर महान् प्रेम अन्य कछ नहीं हो सकता कि व्यक्ति अपने बन्धुद्जनों के लिए स्वयं अपना जीवन ही दे दे।''

पिछले इस कई सप्ताहों से मैं स्वयं से निरन्तर पूछती रही हूँ, गुरुदेव के ७१ वे जन्म-दिवस पर, उन्हें समर्पित करने के लिए सर्वोच्च उपहार क्या हो सकता है? क्या उनके 'दिव्य लक्ष्य' के प्रति अपने जीवन, अपने अस्तित्व को ही दे देना; मानवता के लिए अपने हृदय, मन और हाथों को दे देना, पूर्णतया समर्पित कर देना, सर्वोच्च उपहार नहीं होगा। यह सिद्ध कर देगा कि हमने स्वामी जी के सन्देश को समझा है तथा हम उनके उगाहरण का अनुसरण कर रहे हैं।

गुरुदेव की निजी 'मैं' किंचित भी नहीं है। वे हमारे साथ और हमारे भीतर; हम सबके भीतर जीते हैं, हमारी प्रसन्नताएँ और उन्नति उनकी है। हमारी गलतियाँ और उनके परिणाम भी उनके हैं। हमारे साथ वे भी आनन्दित होते हैं। किन्तु वे उतनी शीघ्रता और गहराई से हमारी आशंकाओं औरस प्रलोभनों को जान लेते हैं, जितना की हमारे पीछे फिसल जाने, तथा हमारे भार और हमारे दोषों को स्वयं सम्भाल लेते हैं। सभी महान् देवदूतों ने संसार के कष्टों को अपने ऊपर झेला है, किन्तु विजयी-नायकों की भाँति, इसकी आवश्यकता और इसके उद्देश्य को समझाते हुए तथा इसमें विजयी होने को जानते हुए झेला है।

स्वामी जी की अनवरत करुणा एवं अक्षय-ज्ञान, उनका संवेदनशील प्रेम एवं क्षमाशीलता तथा उनका अनन्त धैर्य एवं आत्मविश्वास वस्तुतः दिव्य कृपा के सतत प्रमाण हैं; और ऐसा ही हम सबको बनना चाहिए। यीशु के कथनानुसार कहें तो, () अर्थात् प्राणी-मात्र की रक्षा करना हमारा जीवन जीने का ढंगह्वह्वगुरुदेव के समानह्वह्वहमारे बन्धुजनों के लिए एक सतत प्रार्थना और प्रेरणा बन जाना चाहिए कि उन्होंने कैसे जीवन जीना और कार्य करना हैह्वह्वप्रेम पूर्वक सेवा करना, घृणा के बदले प्रेम देना, मिथ्यावादियों के प्रति सद्भावना रखना, हृदय के अन्तरतम तक, सच्चा, ईमानदार एवं निष्ठावान् होना और सदा ऐसी ही रहना, भले ही हमारा चतुर्दिक् झूठ से आच्छादित हो तथा हमारी नैतिकता अन्धकार ग्रस्त हो।

संसार में हमारे जीवन जीने के ढंग से, हमारी विनम्रता और सादगी से; सांसारिक रुढ़िवादियों एवं सम्बन्धों के प्रति हमारी स्वतन्त्रता से; हमारी विनीत प्रसन्नता और हमारी प्रशान्तता से; तथा हमारा इच्छाओं, माँगों, क्षतिपूर्तिओं एवं प्रतिशोध की भावना से रहित होने से लोगों को निश्चित रूप से प्रभावित और प्रेरित होना चाहिए। तब सम्भव है कि कुछ लोग तो एक ईर्ष्यात्मक एवं घृणात्मक उत्तेजना के भाव से ग्रस्त हो जाएँ तथा उसी के अनुसार प्रतिक्रिया भी करें, जबकि अन्य लोग अपने बन्धनों एवं विपत्तियों को प्रति जागरूक

और साथ ही उनसे स्वतन्त्र होने की एक ऊर्ध्वगामी दिव्य आकांक्षा से भर जाएँ!

हमें 'ईश्वर की सन्तानों' के शरीर सम्बन्ध बन्धनों से तथा आधुनिक जीवन की कही जाने वाली सैकड़ों 'आवश्यकताओं'' से मुक्ति दिलाने का; तथा जातिगत, राष्ट्रगत, सामाजिकस्तरगत और धर्मगत स्वार्थपरता एवं अलगावपन की भावना से स्वतन्त्रता दिलाने का, अपने निजि व्यवहार द्वारा निश्चित रूप से सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए। भगवान् की महिमा की देदीप्यमानता हमारी आँखों में से, तथा हमारे समस्त आचरण द्वारा, दीप्तिमान होनी चाहिए। यीशु कहते हैं, ''किन्तु महानता और उदात्त प्रेम तो वह है, जपब चरवाहा अपना जीवन ही अपनी भेड़ों के लिए बलिदान कर देता है।'' ''क्यों? क्योंकि मानव जीवन, यह शरीर, जो कि सर्वाधिक मूल्यवान् भौतिक-निधि है, को स्वेच्छापूर्वक न्योछावर कर देने में, आत्मसमर्पण तथा ईश्वर के प्रति गहनतम प्रेम एवं गहनतम ईश्वरानुभूति का भाव अन्तर्निहित है। मानव, यहाँ तक कि आदिमानव भी अपने सहजज्ञान एवं आवेगशीलता से इसे जानते हैं, यही कारण है कि अपने बन्धुजनों के लिए जीवन बलिदान कर देना एक ऐसा तथ्य है जो मानवमात्र की अन्तरात्मा तथा गहरे उतर जाने की सामर्थ्य रखता है। प्रेम के इस शुद्धतम स्वरूप को देखने से, व्यक्ति भगवान् के सत्य स्वरूप के प्रति, उनकी शक्ति एवं प्रेम के प्रति जागरूक गो जाता है; क्योंकि उनकी शक्ति एवं प्रेम के कारण ही ऐसा बलिदान सम्भव हो सकता है। भगवान् के इस महान् सन्देशवाहको, इन देवदूतों में से ऐसे बहुत से हैं। जिन्होने किसी-न-किसी अवतर पर शरीर को न्योच्छावर कर देने की परीक्षा का सामना किया है। वे अपनी भौतिक सत्ता को त्यागने के लिए तैयार थे और इस प्रकार उन्होंने अपनी आज्ञानाकारिता, अपना विश्वास और अपनी शरीर की आसक्ति से स्वतन्त्रता सिद्ध कर दी। इस प्रकार उन्होंने केवल भगवान् के होने की, इस अनश्वर सत्ता के होने की घोषणा ही नहीं की। प्रत्युत साथ ही जो उन्हें मार देना चाहते थे, अथवा वास्तव में ही मृत्यु का कारण भी बनें, उन्हें भी समझा और क्षमा भी कर दिया। ईशामसीह इस दिव्य भावना का शाश्वत प्रतीत हैं। क्रास पर लटकने का कष्ट झेलते हुए और अन्तिम श्वास लेते हुए उन्होंने उन लोगों के लिए क्षमा-प्रार्थना की जो इसका कारण बने थे।

मैंने श्री स्वामी वेंकटेशानन्द जी द्वारा लिखा हुआ गुरुदेव पर ८ जनवरी १९५० को किये जाने वाले आक्रम का मन को झकझोर देने वाला वर्णन पढ़ा है। इस ८ नम्बर ने मुझे व्याकुल कर दियाह्लह्लयह स्वामी जी के जन्म दिन का अंक है, और इस दिन यह सब हुआ? पादरेणु के वर्णन ने मुझे अत्यन्त गहता से जकड़ लिया। यह मेरे मन-मस्तिष्क में अनवरत गहनता से जकड़ लिया। यह मेरे मन-मस्तिष्क में अनवरत छाया रहा। पूरी घटना को इतने स्पष्ट रूप में घटते हुए मानो सामने देख रही थी, कि स्वयं को इससे दूर नहीं कर पा रही थी। स्वामी जी : ईशामसीह; गोविन्दन; जूडास। दिव्यता की अपूर्व विजय; अनन्त प्रेम तथा परिपूर्ण सौन्दर्य अपने सर्वोत्तम निखार में!

अब मुझे समझ आ गया कि स्वामी जी के 'जन्म दिवस-मेज़' पर प्रस्तुत करने वाला उपहार क्या था। मुझे स्वामी जी के इस रात्रिकालीन परीक्षण तथा परमात्मा की अद्भुत सुरक्षा एवं सहायता का पूर्णरूपेण जन्म भाषा में अनुवाद करना होगा। यह उन सब तक पहुँचाया जायेगा जिनका ज्ञान जर्मनभाषा तक ही सीमित है। उन्हें ज्ञात होगा। स्वामी जी के जीवन की तथा यह घटना भी कि भगवान् की अनन्त कृपा और अथाह प्रेम, किस प्रकार एक जीवनमुक्त मानव द्वारा अभिव्यक्त होता है।

वह प्रेम और करुणा प्रत्येक मानव-हृदय को जकड़ लेती है, और केवल इसी के द्वारा ही स्वार्थपररायण, अलग--अलग तथा अप्रसन्नता मानव का रूपान्तरण किया जा सकता है।

हे गुरुदेव! आपके शिष्यों की कृतज्ञता, श्रद्धा, भक्ति तथा प्रेममयी सेवा आपके जन्मदिवस के पुष्पित फूलाहार हों! तथा यह आने वाले अनेकों वर्षों तक फलें फूलें!

सूचना

आध्यात्मिक शिविर

दिव्य जीवन संघ, चण्डीगढ़ शाखा का १०, ११ मार्च २०१२ को वार्षिकोत्सव

दिव्य जीवन संघ, चण्डीगढ़ शाखा, चण्डीगढ़ शिवानन्द आश्रम की चतुर्थ वर्षगाँठ १० और ११ मार्च २०१२ को मना रही है। इस शुभ अवसर पर वहाँ एक आध्यात्मिक शिविर आयोजित किया जा रहा है। मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ सन्त इस अवसर की शोभा वृद्धि करेंगे। सभी भक्त इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो कर अत्याधिक आध्यात्मिक उत्थापन की अनुभूति प्राप्त करने के लिए सादर आमन्त्रित है।

नामांकन तथा विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

श्री एफ. लाल संसल, अध्यक्षह्वह्व०९८१४५१५४

डा. रमणीक शर्मा सचिव–०९८१४१०५१५४

पत्र व्यवहार के लिए :

सचिव, शिवानन्द आश्रम

दिव्य जीवन संघ

II 2/ सैक्टर २९ ए.

चण्डीगढ़ह्वह्व१६००३०

दूरभाषह्वह्व०१७२–२६३९३२२